चन्दामामा
फ़रवरी १९८२

The entertainer extraordinary

ASP/ECIL/50/A

Electronics Corporation of India Limited
Hyderabad-500 762

चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस महीने की बेताल कथा "सेनापति का चुनाव" है। "अनोखी आंखें" नामक कहानी के द्वारा हमें भली-भांति यह विदित होता है कि जो व्यक्ति कुछ असाधारण शक्तियां रखता है, वह दूसरों की भलाई या हानि करने के लिए उनका उपयोग कैसे कर सकता है।
अमर वाणी
उदारस्य तृणं वित्तं, शूरस्य मरणं तृणम् ।
विरक्तस्य तृणं भार्या, निस्पृहस्य तृणं जगत् ॥
[दाता के लिए धन, शूर के लिए मृत्यु, विरागी के लए पत्नी तथा कामना न रखने वाले के लिए यह जगत एक तिनके के बराबर मूल्यहीन है।]
वर्ष : ३४
फरवरी १९८२
अंक : ६
एक प्रति : १-७५
वार्षिक चन्दा : २१-००
CHANDAMAMA PUBLICATION
CHITRA

चन्द्रहार

आधी रात के वक्त दर्वाजे पर आहट पाकर विश्वेश्वर चौंककर जाग उठा। बाहर आंधी और बरसात के होने की सूचना के रूप में बिजली की चमक के साथ तेज हवा चलने लगी।

विश्वेश्वर ने जाकर दर्वाजा खोला। एक औरत तेजी के साथ अन्दर आई और बोली–"जल्दी दर्वाजा बंद कीजिए! वे लोग इसी ओर आ रहे हैं।"

वह औरत क़ीमती रेशमी साड़ी पहने हुए थी। उसके गले में बहुत सारे गहने पड़े थे। विश्वेश्वर ने दर्वाजा बंद करते हुए देखा, तीन आदमी उसके मकान के सामने दौड़ते जा रहे थे।

"आप कौन हैं? उन लोगों ने आप का पीछा क्यों किया?" विश्वेश्वर ने पूछा।

वह औरत बोली–"उन लोगों ने मेरे गहनों को लूटने के लिए मेरा पीछा किया। मैं अपने रिश्तेदारों के घर शादी में गई थी, अचानक सर दर्द हो गया। इस पर किराये की गाड़ी में चल पड़ी। रास्ते में दो बदमाशों ने गाड़ी को रोका। गाड़ीवाला भी चोर-चोर मौसेरा भाई निकला। मेरी क़िस्मत अच्छी थी, इसलिए उन लोगों के चंगुल से बचकर भाग आई।"

इस बीच जोरों की बरसात शुरू हुई। विश्वेश्वर ने समझाया–"आपको इस बरसात में बाहर निकलना अच्छा न होगा! सवेरा हो जाने पर आप जा सकती हैं!" इसके बाद विश्वेश्वर ने उस औरत के सोने के लिए बीच के कमरे में बिस्तर बिछा दिया।

वह औरत विश्वेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके उस कमरे के अंदर चली गई। बड़ी देर तक विश्वेश्वर को नींद न आई। फिर थोड़ी देर सो गया, जागने पर देखता

कृष्ण गोपाल

क्या है? सूरज निकल आया है! उसने कमरे से बाहर निकलकर देखा, बाहर के दर्वाजे खुले हुए थे।

विश्वेश्वर का कलेजा धड़क उठा। उसने दर्वाजे बंद करके भीतरी कमरे में जाकर देखा। वह औरत नहीं थी। लेकिन चारपाई के बाजू में तिपाई पर उसका चन्द्रहार पड़ा हुआ था। वह चकित रह गया। क्योंकि वह चन्द्रहार कम से कम चार हज़ार का होगा।

उस वक़्त विश्वेश्वर को याद हो आयी कि शादी के दिन से लेकर उसकी पत्नी गौरी चन्द्रहार खरीद कर देने के लिए तंग करती आ रही है! लेकिन चन्द्रहार बनाकर देने के लिए उसके पास रुपये न थे। इस पर गौरी ने हठ किया कि अगली दीपावली तक उसे चन्द्रहार बनवाकर देना है! पर विश्वेश्वर ने अपनी असमर्थता बताते हुए साफ़ इनकार किया था।

इसके पिछले दिन विश्वेश्वर ने दफ़्तर से लौटकर देखा। मेज पर उसकी पत्नी गौरी की चिट्ठी पड़ी हुई थी। उसमें गौरी ने लिखा था—"आप को मेरी कोई परवाह नहीं है, जब तक आप मुझे चंद्रहार बनाकर न देंगे, तब तक मैं इस देहली पर क़दम न रखूंगी।" यों चिट्ठी छोड़कर गौरी अपने पीहर चली गई थी।

विश्वेश्वर की समझ में न आया कि रात को जो औरत उसके घर आई थी, वह अपना चन्द्रहार वहाँ पर क्यों छोड़ गई है।

अचानक विश्वेश्वर को अपनी पत्नी की पुकार सुनाई दी। उसकी पत्नी किसी कारण से जल्दी लौट आई है। इस वक़्त अगर गौरी उस चन्द्रहार को देखेगी तो वह यही सोचेगी कि यह हार उसी के वास्ते बनाया गया है। सच्ची बात बताने पर भी वह यक़ीन न करेगी। उस हार को किसी तरह से रात को अपने घर आई हुई औरत तक पहुँचाना है।

यों विचार कर विश्वेश्वर ने उस चन्द्रहार को रसोई घर के कोयले वाले

बोरे में छिपा दिया। वह बोरा कोयला एक महीने तक चलेगा। तब तक वह हार उसकी पत्नी की आँखों में न पड़ेगा।

इसके बाद विश्वेश्वर ने दर्वाजा खोला। भीतर प्रवेश करते हुए गौरी बोली–"सूरज निकल आया है, अभी तक नींद कैसी? कम से कम संक्रांति तक तो मुझे चन्द्रहार बनवा कर देना होगा! समझें! इसीलिए मैं चली आई हूँ!"

दर असल गौरी अपनी भाभी से झगड़ा करके लौट आई थी, पर यह बात उसने विश्वेश्वर को बताना नहीं चाहा। इसके बाद विश्वेश्वर खाना खाकर दफ़्तर चला गया। गौरी खाना खाकर रसोई घर को साफ़ कर रही थी, तब एक बिच्छू कोयले के बोरे के भीतर चला गया। गौरी ने सारे कोयले नीचे गिरा दिये और बिच्छू को झाड़ू से मार डाला।

गौरी जब कोयले बोरे में डाल रही थी, तब उसकी आँखें चमक उठीं। कोयले के बीच पड़े चन्द्रहार को साफ़ किया और उसे अपने कंठ में पहन कर फूली न समाई।

गौरी ने सोचा कि कोयले की दूकान में किसी तरह पहुँचा हुआ यह हार उनके बोरे में आ गया है। यह बात अगर उसके पति को मालूम हो जाएगी तो वह फिर से चन्द्रहार बनाकर न देगा! इसलिए इस हार को संक्रांति तक उसके पति की आँखों में पड़ने से बचाना होगा! जब वे चन्द्रहार बनाकर देंगे, तब इस हार को गलाकर चूड़ियाँ बनवा सकती है।

फिर गौरी के मन में यह विचार आया कि तब तक इस हार को बचावे कैसे? इसके बाद सोच-विचार कर उसने हार को एक डिब्बे में रखा। उस पर अपने पीहर से लाये हुए लड्डू डाल दिये, तब उसे पीहर से आये हुए आदमी के हाथ देकर समझाया कि वह इस डिब्बे को सुरक्षित उसकी माँ के हाथ सौंप दे।

वह आदमी शाम तक गाँव पहुँचा और गौरी के घर गया। पर उस वक़्त गौरी

की माँ घर पर न थी। इसलिए उसने वह डिब्बा गौरी की भाभी के हाथ दे दिया। उसने डिब्बा खोलकर देखा। लड्डू देख वह सोचने लगी कि उसकी ननद ने ये लड्डू क्यों वापस कर दिये हैं? यों सोचते उसने उन्हें ज्योंही हटाये त्योंही चन्द्रहार दमक उठा।

"ओह! यह लड़की बड़ी चालाक है। ससुराल से सारी चीज़ें मायके पहुँचा रही है। इसे उचित सबक़ सिखाना होगा।" यों विचार करके गौरी की भाभी ने चन्द्रहार ले लिया और लड्डू वाले डिब्बे को अपनी सास के कमरे में रख दिया।

इसके बाद जब उसका पति नरहरि घर लौटा, तब चन्द्रहार उसके हाथ देकर बोली–"तुम नाहक़ बेमतलब के सवाल करके मेरा दिमाग मत खाओ! शहर में ले जाकर इसे गलवा करके नया गहना बनवाकर ले आओ।"

नरहरि अपनी पत्नी की बात हमेशा सर आँखों पर रखता है। वह सवेरा होते ही शहर के लिए चल पड़ा और एक जौहरी की दूकान में पहुँचकर पूछा कि उस चन्द्रहार को गलाकर एक दूसरे क़िस्म का बढ़िया गहना बनाकर दे। दूकानदार ने नरहरि के आगे गहनों के कई नमूने रख दिये। नरहरि उन्हें देख ही रहा था, इस बीच दो सिपाहियों ने आकर उसे पकड़ लिया। दूकानदार ने अपने नौकर द्वारा सिपाहियों को बुला भेजा था।

सिपाहियों ने नरहरि से पूछा–"चोरी का माल गलवाना चाहते हो? चलो, पहले कचहरी में, तब क़ैदखाने में!"

नरहरि का चेहरा सफ़ेद हो उठा, वह बोला–"इसे मैंने नहीं चुराया है! मेरी पत्नी ने इसे मेरे हाथ दिया है।"

इस पर सिपाही नरहरि को उसके गाँव ले गये। नरहरि की पत्नी ने सिपाहियों को देखते ही चीखकर कहा–"यह हार शहर से मेरी ननद ने भेजा है!"

सिपाही नरहरि की पत्नी को भी साथ लेकर गौरी के घर पहुँचे। गौरी काँपते हुए बोली—"मुझे तो यह हार कोयले के बोरे में मिला है।"

सिपाही कोयले की दूकान में जाना चाहते थे, इस पर विश्वेश्वर ने सारा वृत्तांत सुनाकर कहा—"यह हार चोरी का माल नहीं है, एक अमीर औरत हमारे घर भूलकर छोड़ गई है।"

आखिर इस समस्या को जटिल बनते देख सिपाही सोच ही रहे थे कि क्या किया जाय, तभी उस मकान के आगे एक घोड़ा गाड़ी आ रुकी। उसमें से चन्द्रहार की मालिकिन उतर पड़ी, घर में प्रवेश करके सिपाहियों से बोली—"चन्द्रहार को किसी ने चुराया नहीं, इनके घर पर मैं भूल से ही छोड़ गई हूँ। अब आप लोग जा सकते हैं।"

सिपाहियों के जाते ही विश्वेश्वर ने उस धनी औरत से पूछा—"आप इस चन्द्रहार को हमारे घर क्यों छोड़ गईं?"

"उस दिन रात को मैं जिस चारपाई पर सोई, उसके बाजू में एक तिपाई पर आप की पत्नी की चिट्ठी पड़ी हुई थी। उसे मैंने पढ़ी। मेरे पति तो करोड़पति हैं, ऐसे हारों की कमी हमारे पास नहीं है।', फिर वह अमीर औरत गौरी की ओर मुड़कर बोली—"जब पति कोई गहना खरीदकर देने की शक्ति नहीं रखते, ऐसी हालत में उन्हें सताना किसी भी गृहिणी के लिए उचित नहीं है! सब से मुख्य हैं—पति का उत्तम व्यवहार और प्यार! अब तुम्हें सिपाहियों का कोई डर नहीं है, इसे ले लो।" यों समझाकर वह धनी औरत गौरी के हाथ चन्द्रहार देने को हुई।

लेकिन गौरी सर झुकाकर उस हार को लेने से इनकार करते हुए बोली—"आप ने एक-दो सुंदर नीतिपूर्ण वाक्यों द्वारा मेरी आँखें खुलवा दीं, आज तक मैंने आडंबरों के पीछे अपने पति को तंग किया है। मेरे साथ अत्यंत प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेवाले मेरे पति ही मेरे वास्ते अमूल्य चन्द्रहार हैं!"

[२]

[बेहथियार मंदरदेव को बंदी बनाकर समुद्र तट की ओर ले जानेवाले देश द्रोही दो अंग रक्षक अचानक बिजली के गिरने से मर गये। मंदरदेव तथा उसके सैनिकों को कुंडलिनी द्वीप के घुड सवारों ने घेर लिया। उस लड़ाई में कुछ घुड़सवार मर गये और बाक़ी लोग क़िले की ओर दौड़ पड़े। बाद...]

मंदरदेव को गंभीर देख सैनिकों ने भांप लिया कि वे गाहरी सोच में है। उसने एक बार समुद्र और क़िले की ओर देखकर गहरी सांस ली। सैनिक राजा के मन को ताड़ना चाहते थे, इस बीच मंदरदेव बोला–

"हम लोग इस राज्य को जितनी जल्दी छोड़कर जा सके, उतना ही अच्छा है। घायल हुए कुंडलिनी द्वीप के घुड़ सवार हमारा समाचार जरूर अपने नेता को देंगे। इसके बाद वे दुगुनी सेना के साथ हम को घेर लेंगे। हमें इन छोटी नावों में इस महा समुद्र पर किन्हीं अज्ञात द्वीपों की ओर जाना पड़ेगा। हम खुद नहीं जानते कि किस क्षण में हमें किस प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ेगा! क्या तुम चारों लोग मेरे साथ इस द्वीप को छोड़ना चाहते हो?"

इसके जवाब में चारों सैनिक एक स्वर में बोल उठे–"महाराज, हम आज तक आप के आश्रय में जीते रहे। ऐसी हालत में हम कठिनाई के वक़्त आप को अकेले छोड़कर चले जाने वाले विश्वास घातक नहीं हैं!"

मंदरदेव सैनिको की राजभक्ति की तारीफ़ करते बोला–"मैं तुम लोगों की राजभक्ति पर संदेह नहीं करता। मैं अविवाहित हूं। युद्ध की घोषणा-जैसे राज धर्म का पालन तक किये बिना अचानक मेरे राज्य पर अधिकार करने वाले नरवाहन मिश्र का अंत करने के सिवा मेरे जीवन का कोई दूसरा लक्ष्य नहीं है। इसलिए तुम लोग...अपनी पत्नी-बच्चे और रिश्तेदारों को..."

"हमारे लिए भी ऐसे कोई बंधन नहीं हैं, महाराज!" सैनिक एक स्वर में बोले।

इसके बाद मंदरदेव ने सैनिकों की ओर वात्सल्य भरी दृष्टि से देखकर कहा–"अब हमारा थोड़ा-सा भी विलंब करना किसी भी हालत में उचित नहीं है, तुम लोग जल्दी नावों पर सवार हो जाओ।"

डांडों की मदद से दोनों नावें समुद्र के जल में आगे बढ़ीं। तब तक तूफ़ान थोड़ा थम चुका था। बादलों का गर्जन व बिजली की कौंधें भी कम हो गई थीं, पर रह-रहकर एक-दो बौछारें हो जाती थीं। सूर्यास्त हो चुका था। चारों तरफ़ फैले गहरे अंधकार को पूर्णिमा का चान्द बड़ी तेजी के साथ समुद्र के गर्भ की ओर भगा ले जा रहा था।

नावें समुद्र में बड़ी दूर तक चली गईं, पर उन पर सवार हुए लोगों के मन में इस बात का बिलकुल ख्याल तक न था कि वे किस दिशा में और कहाँ जा रहे हैं? बस, उन लोगों ने यही सोचा कि नरवाहन मिश्र के हाथ में पड़ने से बचकर कहीं भी चले जावें; यही उनके सामने उस वक़्त एक मात्र लक्ष्य था।

समुद्र पर चार-पांच घंटों की यात्रा के बाद उन्हें दूर पर टिमटिमाने वाली कांति लहरों पर तिरते दिखाई दी। उस भयंकर आंधी में मछली पकड़ने के लिए मछुए समुद्र पर उतनी दूर तक यात्रा करनेवाले कोई न होंगे। तब कहीं उन्हें बन्दी बनाने के लिए पीछा करनेवाली नरवाहन मिश्र की नावें तो नहीं हैं? यही शंका उनके मन में बराबर पैदा होने लगी।

इस शंका और भय के पैदा होते ही, मंदरदेव नाव पर खड़ा हो गया। टिमटिमाने वाली रोशनी धीरे-धीरे उन्हीं की तरफ़ बढ़ी चली आ रही है। अच्छी तरह से जांच करके देखने के बाद मंदरदेव ने भांप लिया कि वे दोनों बड़े जहाज़ नहीं, बल्कि दो छोटी-छोटी डोंगियां हैं।

इसके बाद मंदरदेव ने अपने सैनिकों से पूछा—"तूफान की वजह से कल्लोल मचाने वाले इस समुद्र पर एक और युद्ध लाज़मी हो सकता है! उन चिरागों की रोशनी अगर हम लोगों जैसे भागनेवाले हमारे देश के सैनिकों की नावों की हो तो कोई घबड़ाने की बात नहीं है। ऐसा न हो, तो निश्चय ही वे कुंडलिनी द्वीप की नावें हो सकती हैं। हम लोगों में किसी के पास तीर और कमान नहीं हैं न?"

सैनिकों में से एक ने झट यों जवाब दिया—"महराज, हमारे पास तलवारों को छोड़ और किसी तरह के हथियार नहीं हैं। महा मंत्री ने जब हम लोगों को आप की रक्षा करने का आदेश दिया, तब हम झट निकल पड़े।" इसलिए हम अपने साथ किसी और प्रकार के हथियार ला नहीं पाये। दर असल उस वक़्त हमें सोचने तक का भी मौका न मिला।

"कोई बात नहीं! मराल देवी की कृपा और हमारे हाथों की करामात हमारी रक्षा करने के लिए पर्याप्त हैं। अगर हमारे लिए मौत निश्चित है, तो प्राण के छूटने के बाद हमारे ये शरीर चाहे समुद्र

की मछलियों का आहार बने या भूगर्भ में रहनेवाले कीड़े-मकोड़ों का आहार बन जाये, दोनों बराबर है न?" राजा मंदरदेव ने जवाब दिया।

मंदरदेव की ये बातें सुनने पर सैनिकों की हिम्मत बंध गई। इस बीच दूर पर टिमटिमाने वाली रोशनी उनकी नावों के समीप आने लगी। जब वे नावें थोड़ा नजदीक आ गईं, तब उन नावों में से एक दीर्घ काय व्यक्ति अपने हाथ में धनुष लेकर खड़ा हो गया।

वैसे चाँद की रोशनी में उस का चेहरा साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था, मगर यह स्पष्ट मालूम हो रहा था कि वह एक आजानुबाहु है।

इस पर मंदरदेव ने अपने सैनिकों को चेतावनी दी-"मेरी शंका अब दूर हो गई। वे लोग धनुष-बाणों के साथ एक दम तैयार हो कर आये हैं। हमें तब तक उनके बाणों के निशानों से अपने को बचाते हुए नावों के अन्दर बैठना होगा, जब तक उनकी नावें हमारे समीप पहुँच नहीं जातीं, समझे।..." मंदरदेव की ये बातें पूरी न हो पाई थीं कि इस बीच सर्र से एक बाण आकर उसकी नाव से टकरा गई।

इस पर मंदरदेव और उसके सैनिकों ने नाव के भीतरी हिस्से में कूदकर अपने सिर बचा लिये।

उनके समीप आनेवाली नावों पर सवार व्यक्तियों की चेतावनियाँ तथा तेजी के

साथ उनके द्वारा डांडे चलाने की आवाज़ मंदरदेव तथा उसके सैनिकों को साफ़ सुनाई दी। इस पर उन लोगों ने समझ लिया कि दुश्मन तेजी के साथ उनके नजदीक़ आ रहा है। तब उन लोगों ने सोचा कि जब तक दुश्मन तलवार के वार के समीप न पहुँचेगा, तब तक उन्हें झुककर नावों में बैठना ही पड़ेगा। इसके बाद आमने-सामने वाली लड़ाई में उन्हीं लोगों की जीत होगी जिन की क़िस्मत अच्छी है या जो ज्यादा हिम्मतवर हैं।

इन्हीं विचारों में डूबे अपने प्राणों को मुट्ठी में लिये मंदरदेव तथा उसके सैनिक चौकन्ने बैठे थे, तभी उन्हें यह भीकर ध्वनि सुनाई पड़ी–"जय समरसेन की!" इस जयकार को सुन वे चकित रह गये, पर इस बीच एक नाव आकर मंदरदेव की नाव से इस तरह टकरा गई जिससे उसकी नाव उलटने को हुई। अब बिना विलंब किये मंदरदेव तलवार खींचकर खड़ा हो गया और चिल्ला उठा–"जय मराल देवी की!" उसी क्षण उसके हाथ की तलवार बिजली की तेजी के साथ दुश्मन के एक सैनिक के सर से टकरा गई जिससे वह चीखकर समुद्र में गिर गया। इसी वक़्त मंदरदेव के चारों सैनिक भयंकर गर्जन करते सामनेवाली नावों पर टूट पड़े। इतने में सामनेवाली नावों से यह पुकार सुनाई दी–"रुक जाओ, रुक जाओ! हम लोग आपस में दुश्मन नहीं!" यह पुकार

सुनकर मंदरदेव और उसके सैनिक विस्मय में आ गये ।

इस बीच मंदरदेव की तलवार के वारों से दो और सैनिक चीखते-चिल्लाते समुद्र के जल में लुढ़क गये ।

इसके बाद मंदरदेव ने तलवार उठाकर ललकारते हुए पूछा—"तो सच-सच बताओ, तुम लोग दर असल कौन हो? क्या कुंडलिनी द्वीप के नरवाहन मिश्र के सैनिक तो नहीं हो?"

"हम लोग कुंडलिनी द्वीप के निवासी जरूर हैं, लेकिन नरवाहन मिश्र हमारा जानी दुश्मन है! अगर आप लोग मराल द्वीप के निवासी हैं तो हम सब आपस में दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त हैं! अपनी तलवारों को म्यानों में रख दीजिए!" एक दीर्घकाय व्यक्ति ने कहा ।

ये बातें सुनने पर मंदरदेव को लगा कि कहीं इसमें धोखा-दगा तो नहीं है । फिर इतने में वह संभलकर बोला—"तो बताओ, तुम्हारा नेता कौन है? उसका नाम क्या है?"

"मेरा नाम शिवदत्त है! इन नावों में जो लोग हैं, ये सब मेरे अनुचर हैं!" शिवदत्त ने जवाब दिया ।

"शिवदत्त! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ!" मंदरदेव ने उत्साह में आकर कहा । फिर बोला—"आज से बीस साल पहले—याने मैं जब दस साल का था, तब मैंने आप का तथा कुंडलिनी द्वीप के महा सेनापति समरसेन का नाम सुना था । आप ने तथा समरसेन ने किन्हीं भयंकर द्वीपों में जो साहसपूर्ण कार्य किये थे, उन्हें मैं कहानियों के रूप में सुना करता था । इस वक्त मुझे उस महा सेनापति के खास अनुचर बने आप के दर्शन करने का भाग्य प्राप्त हुआ है । इसलिए मैं हृदयपूर्वक आप का स्वागत करता हूँ ।"

"आप कौन हैं? कहीं मराल द्वीप के राजा मंदरदेव तो नहीं हैं?" शिवदत्त ने पूछा ।

"जी हाँ! मैं दो घंटे पहले तक मराल द्वीप के राजा मंदरदेव था। लेकिन इस वक़्त सिर्फ़ एक साधारण मंदरदेव हूँ। मेरा राज्य और मेरा मुकुट नरवाहन मिश्र के हाथों में चला गया है।" मंदरदेव ने निराशपूर्ण स्वर में जवाब दिया। शिवदत्त ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। उसकी दोनों नावें मंदरदेव की नावों के पास आकर रुक गईं। इसके बाद शिवदत्त मंदरदेव की नाव में आ गया। मंदरदेव ने उसे अपनी बगल में बैठने का संकेत किया।

शिवदत्त मंदरदेव की बगल में बैठते हुए बोला–"यह बात सच है कि राज्य के खोने के साथ राजा का पद भी चला जाता है, अच्छी बात है, मैं आप को मंदरदेव ही पुकारा करूँगा। यह बताइये कि आप इस समय कहाँ जा रहे हैं?"

मंदरदेव ने गहरी साँस ली, फिर मुस्कुराते हुए बोला–"मैं नहीं जानता कि इस वक़्त कहाँ जा रहा हूँ और मेरा लक्ष्य क्या है? पर नरवाहन मिश्र के हाथों से बचने की कोशिश करना ही फिलहाल मेरा कर्तव्य है। ये चारों मेरे सैनिक हैं।"

"अच्छी बात है! इसका मतलब है कि हम दोनों की हालत एक सी है। मैं भी उस दुष्ट के हाथों से बचना ही अपना कर्तव्य मानकर चल पड़ा।" शिवदत्त ने जवाब दिया।

इस बीच मंदरदेव के सैनिकों में से एक उठकर बोला–"महाराज, आप समुद्र के किनारे की ओर देख लीजियेगा। एक साथ इतने सारे दीपों का हिलना क्या आश्चर्य की बात नहीं है? मेरा ख़्याल है कि वे सब समुद्र पर यात्रा के लिए निकली हुई नावें हैं। दुश्मन कहीं हम पर हमला करने के लिए तो निकल नहीं पड़ा है?"

इस पर शिवदत्त तथा मंदरदेव ने समुद्र के किनारे की ओर बड़ी सावधानी के साथ देखा। सैनिक की बातों में उन्हें

कोई अतिशयोक्ति दिखाई नहीं दी। समुद्र का किनारा दीपकों की रोशनी से चमक रहा था। हवा में उड़नेवाले बड़े-बड़े जुगनुओं की भांति लहरों के आघात से दीपकोंवाली नावें ऊपर-नीचे की ओर हिल रही थीं।

उस दृश्य को देखकर शिवदत्त ने कहा–"हमें सीधे समुद्र में जहाँ तक हो सके, दूर चला जाना उचित होगा! अगर हमारी क़िस्मत खुल गई तो हम किसी द्वीप में जा पहुँचेंगे, वरना जो भाग्य में लिखा होगा....बस, वही होगा। किसी भी हालत में नरवाहन मिश्र के हाथों में पड़ना हमारे लिए अपमान की बात होगी।"

मंदरदेव ने स्वीकृतिसूचक अपना सर हिलाया। इसके बाद डांडों की मदद से चारों नौकाएँ समुद्र पर आगे बढ़ती गईं। उनकी शंका के मुताबिक़ समुद्र के किनारे पर दीपकों की जो रोशनी दिखाई दी, वह नरवाहन मिश्र के नौका दल की ही थी। उसका नौका दल भी समुद्र पर निकल पड़ा। शिवदत्त को जब लगा कि दुश्मन का नौका दल उनका पीछा कर रहा है, तब उसने अपनी नावों के दीपों को बुझवा दिया।

इसके बाद चारों नावें अंधकार में ही यात्रा करने लगीं। एक दूसरे से टकरा न जाय, इस ख्याल से मल्लाह बड़ी सावधानी बरतने लगे। मंदरदेव टिमटिमानेवाले तारों से शोभायमान आसमान की ओर देखते बोला–"हे शिवदत्त! आप सब कुंडलिनी द्वीप के निवासी तथा महा सेनापति समरसेन के अनुचर हैं, ऐसी हालत में आप को इस प्रकार उस द्वीप को छोड़कर क्यों भाग आना पड़ा? यह बात मेरे लिए आश्चर्य की मालूम होती है।"

शिवदत्त ने पल भर सोचकर कहा–"यह सब उस नरवाहन मिश्र की कुटिल राजनीति का फल है। इसमें समरसेन की भूल भी है। ये सारी बातें मैं आप को विस्तार के साथ सुनाता हूँ, सुनिये।" इन शब्दों के साथ शिवदत्त वह वृत्तांत सुनाने लगा। (और है)

सेनापति का चुनाव

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन, में नहीं जानता कि श्रम से भरे इस कठिन कार्य को अपने सर लेने से आपको किसने प्रेरित किया है, लेकिन कभी-कभी मनुष्यों के विचारों की भिन्नता के कारण यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन कार्य प्रशंसनीय है और कौन नहीं? इसके उदाहरण के रूप में मैं आपको चित्रपुर के राजा की कहानी सुनाता हूं। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: एक बार चित्रपुर के राज्य में सेनापति का पद खाली हो गया। उस राज्य का चिर काल से यह रिवाज रहा है कि सेनापति का

बेताल कथाएं

पद खाली होने पर उस पद पर उप सेनापति को नियुक्त करे। पर इस समय ऐसा करने में एक कठिनाई पैदा हो गई। क्योंकि सेनापति के पद के लिए योग्य व्यक्ति एक के बजाय दो हैं। एक का नाम चेतन वर्मा और दूसरे का नाम चन्दन वर्मा। दोनों शौर्य और पराक्रम के लिए समान रूप से प्रसिद्ध हैं।

राजा चित्रग्रीव यह निर्णय नहीं कर पाये कि उन दोनों में से किसको सेनापति का पद दें, मंत्री भी राजा को उचित सलाह दे नहीं पाये।

इस पर राजा ने चेतन वर्मा तथा चन्दन वर्मा की मानसिक स्थिति को जानने के लिए एक उपाय सोचा। चित्रपुर राज्य के साथ शत्रुता रखने वाले दो पड़ोसी राज्य थे, उन राज्यों पर अधिकार करने में जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा का परिचय देगा, उसीको सेनापति के पद पर नियुक्त करने का राजा ने निश्चय कर लिया।

राजा ने यह समाचार अपने दोनों उप सेनापतियों को सुनाया। सब से पहले चेतन वर्मा के अधीन थोड़ी सेना सौंप दी गई। उस सेना की मदद से उसे शत्रु राजा को हराना होगा।

चेतन वर्मा बड़े उत्साह के साथ शत्रु राजा पर हमला कर बैठा। वास्तव में शत्रु सेना के सामने चेतन वर्मा की सेना बहुत ही कम थी। पर चेतन वर्मा का ध्यान इस ओर बिलकुल न था, उसकी सारी दृष्टि सेनापति के पद पर केन्द्रित थी।

अपनी थोड़ी सी सेना के साथ चेतन वर्मा ने शत्रु राजा पर चढ़ाई करके भारी क्षति पाई। इसके बाद वह अपनी बची हुई सेना के साथ लौटने की सोच रहा था, उस वक़्त शत्रु राजा ने इस विश्वास के साथ कि उसकी विजय निश्चित है, अपने थोड़े से अंग रक्षकों को लेकर चेतन वर्मा को भागने से रोका। इस पर झट चेतन

वर्मा ने अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ शत्रु राजा को घेर लिया और उसका सिर काटने की धमकी देकर उसके हाथ से इस आशय का संधि-पत्र लिखवाया कि वह चित्रपुर राजा का सामंत है।

इस प्रकार चेतन वर्मा विजय के गर्व से चित्रपुर को लौट आया।

इसके बाद चन्दन वर्मा के हाथ में भी उतना ही सैनिक बल सौंपा गया जितना चेतन वर्मा के। लेकिन चन्दन वर्मा ने सीधे शत्रु देश की सीमा पार कर वहाँ के राजा पर हमला न कर बैठा। उसने सीमा पर अपना शिविर स्थापित किया, तब शत्रु राजा के सैनिक बल और क़िले की रक्षा के बारे में भेदियों के द्वारा गुप्त रूप से जानकारी हासिल की। उसके आधार पर चन्दन वर्मा ने अनुमान लगाया कि सीमा पार करके शत्रु राजा के क़िले को घेरकर उसे हराना नामुमकिन है।

अगर शत्रु राजा उसके शिविर का पता लगाकर अपने क़िले को छोड़ हमला कर बैठे तो सीमा पार किये बिना उसका सामना कर सकने वाला सैनिक बल उसके पास है। यों विचार करके चन्दन वर्मा ने अपने राजा के दर्शन करके निवेदन किया— "महाराज, मैंने भेदियों के द्वारा शत्रु राजा के सैनिक बल तथा क़िले की रक्षा के बारे में आवश्यक जानकारी हासिल की है। अगर मैं अपने राज्य की सीमा पार
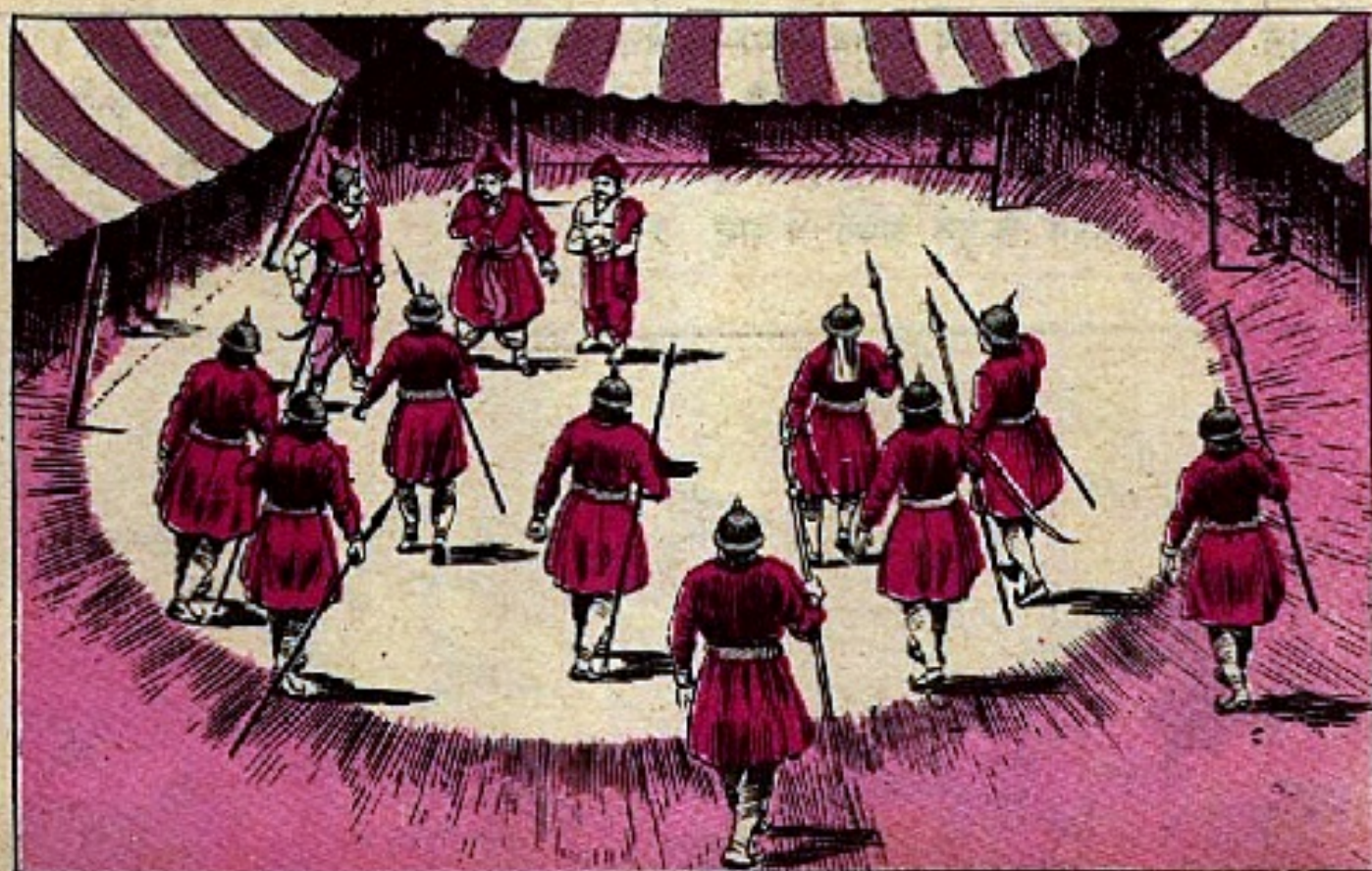
करके शत्रु राजा के क़िले को घेर लूं तो अनावश्यक हमारे सैनिक बल की क्षति हो सकती है या हमारी हार। इसलिए मैं शत्रु राजा पर हमला करने का विचार त्याग रहा हूँ।"

इस पर राजा ने उसी समय चन्दन वर्मा को सेनापति के पद पर नियुक्त किया। बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, क्या चित्रपुर के राजा का निर्णय अदूरदर्शिता का परिचय नहीं दे रहा है? युद्ध में शत्रु राजा को हराकर लौटने वाले चेतन वर्मा को छोड़, शत्रु राजा पर हमला करने में ही संकोच करने वाले चन्दन वर्मा को सेनापति के पद पर बिठाना कहाँ तक उचित है? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आपका सर फट जाएगा!"

इस पर विक्रमार्क ने यों जवाब दिया— "राजा का यह निर्णय समुचित ही है। एक सेनापति का प्रधान गुण यह होता है कि वह हमला करने के पूर्व अपने व शत्रु दल के बल का अंदाज़ा लगा ले, जो ऐसा नहीं कर पाता है, वह सिर्फ़ विजय की कामना से चेतन वर्मा के जैसे शत्रु राजा का सामना करके अनावश्यक सैनिक क्षति का कारणभूत बन जाता है और साथ ही अपने राजा को खतरे में डाल देता है! दर असल चेतन वर्मा की विजय का कारण शत्रु राजा की मूर्खता है। लेकिन चन्दन वर्मा अपने सैनिक बल की अच्छी तरह से जानकारी रखता था। उसने शत्रुराजा पर हमला करने के पहले भेदियों के द्वारा पूर्ण रूप से शत्रु के सैनिक बल का पता लगवाया। ऐसे सेनापति के द्वारा राजा की भले ही भारी विजय प्राप्त न हो, पर अनावश्यक रूप से उनकी हार न होगी। यह बात समझने की वजह से ही चित्रपुर के राजा ने चन्दन वर्मा का सेनापति के पद के लिए चुनाव किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
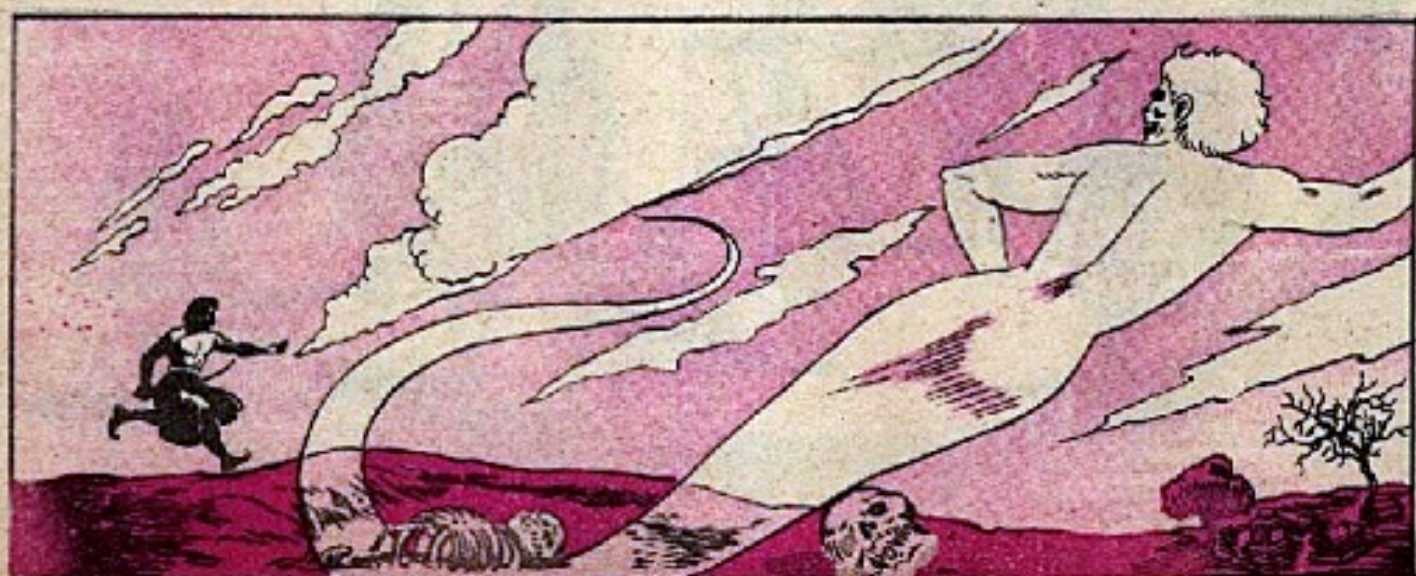
आत्महत्या का रहस्य

नागभूषण के सर पर अयाचित रूप में तक़लीफ़ों का पहाड़ टूट पड़ा। उसने उस साल कर्ज़ लेकर अपनी बेटी की शादी की। उसकी पत्नी अचानक बीमार पड़ गई तो काफी रुपये खर्च करके उसका इलाज करवाया। ज्यादा फसल होने की आशा लगाये बैठा रहा, लेकिन वक़्त पर बरसात न होने की वजह से फसल न हुई। महाजन उस पर दबाव डालने लगा कि वह अपना घर और खेत बेचकर उसका कर्ज़ चुका दे।

नागभूषण ने सोचा कि उसकी तक़लीफ़ों का कोई अंत नहीं है, इसलिए उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। आधी रात के वक़्त अपने पिछवाड़े के रीठा के पेड़ के पास चला गया। उस वक़्त उसके मन में भगवान की प्रार्थना करने की इच्छा जगी।

नागभूषण ने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा—"भगवान, मुझे कम से कम अगले जन्म में ही सही, एक अमीर के घर पैदा कर दो।" उसके मुंह से ये शब्द निकलने की देर थी कि उसके पैरों के पास एक पोटली आ गिरी। नागभूषण चौंक पड़ा। उसने पोटली खोलकर देखा। उसकी आँखें चमक उठीं। पोटली भर में सोने के सिक्के थे।

"आख़िर भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन लीं।" यों सोचते नागभूषण घर के भीतर चला गया और अपनी पत्नी को जगाकर सारी बातें कह सुनाईं।

"भगवान हमेशा अपने भक्तों का उपकार करते हैं।" यों कहते नागभूषण की पत्नी ने सोने के सिक्कों को अपनी आँखों से लगाया और उन्हें संदूक़ में छिपाया।

"वसुंधरा"

नागभूषण की समझ में न आया कि क्या किया जाय? अगर उसके बेटे को फांसी की सजा मिले तो वह उसके हाथ से निकल जाएगा, साथ ही सब लोग उसे हत्यारे का पिता कहकर अपमानित करेंगे। ज़िंदगी भर इस अपमान को सहते सड़ना होगा। इससे मर जाना कहीं अच्छा है, यों विचार कर नागभूषण फिर आधी रात के वक़्त रीठा के पेड़ के पास पहुँचा और प्रार्थना की–"भगवान, मैं इस अपयश का शिकार होने जा रहा हूँ कि मेरा बेटा हत्यारा है! अगले जन्म में मुझे एक बुद्धिमान बेटे को दे दो।"

उस दिन से नागभूषण की दरिद्रता जाती रही। उसने सारे कर्ज़ चुकाये, थोड़ा-सा खेत और खरीद कर आराम से अपने दिन बिताने लगा। लेकिन अब नागभूषण के सामने एक और कठिनाई पैदा हुई। अपने पिता के हाथ भारी संपत्ति के लगते ही उसका बड़ा बेटा आवारा बन बैठा और जुआ खेलने लगा।

एक दिन जुआ खेलते वक़्त बड़ा झगड़ा पैदा हुआ। उस वक़्त नागभूषण के बेटे ने एक जौहरी के बेटे को बुरी तरह से पीटा, जिससे जौहरी का लड़का बेहोश होकर गिर पड़ा। सबने सोचा कि जौहरी का बेटा बचेगा नहीं।

उस वक़्त पेड़ की डालों में से ये शब्द सुनाई दिये–"जौहरी का लड़का एकदम ज़िंदा है? तुम्हारा बेटा हत्यारा कैसे हो सकता है?"

नागभूषण ने अचरज में आकर पेड़ की डालों में झांककर देखा। पर उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। इस पर उसे लगा कि भगवान ने ही ये शब्द कहे होंगे। फिर क्या था, वह सीधे जौहरी के घर पहुँचा। जौहरी का बेटा चारपाई पर लेटा था और उसके बदन में बहुत सारी पट्टियाँ बंधी हुई हैं। उसके माँ-बाप और रिश्तेदार उसके चारों तरफ़ उदास बैठे हुए हैं।

जौहरी को देखते ही नागभूषण ने गुस्से में आकर कहा–"अजी, क्या आपका इस तरह मुझ पर इलज़ाम लगाना मुनासिब लगता है? अगर आप मुझ पर नाराज़ हैं तो किसी दूसरे तरीके से उसका बदला लीजिए! लेकिन इस प्रकार अन्याय पूर्वक अपने बेटे के बदन पर पट्टियाँ बंधवाकर सब जगह यह झूठा प्रचार करते हैं कि मेरे बेटे ने आप के बेटे को पीटा है?"

जौहरी इसका कोई जवाब देने वाला ही था कि झट उसका बेटा उठ बैठा और अपनी पट्टियों को खोलते हुए खीज उठा–"छी: छी:, ये पट्टियाँ कैसी? और यह सब तो मुझे बड़ा बुरा लग रहा है?"

सब लोग देखते क्या है? जौहर के बेटे के बदन पर एक छोटा सा घाव तक नहीं है! जौहरी की पत्नी ने यह कहते हुए अपने बेटे के साथ गले लगाया–"यह सब कोई जादू-टोना मालूम होता है।"

"चाहे यह जादू-टोना हो या गाया-मंत्र, हमारा बेटा बच गया है।" इन शब्दों के साथ जौहरी ने नाभूषण से माफ़ी माँग ली।

इस पर नागभूषण संतुष्ट होकर अपने घर चला गया। इस घटना के बाद नागभूषण का बेटा एक बुद्धिमान जैसा व्यवहार करने लगा। थोड़े दिन बाद

नागभूषण के दिमाग में एक नई बात सूझी। वह यह कि यह बात सच है कि वह धनवान है, पर कोई करोड़पति नहीं बन पाया, कई पीढ़ियों तक उसके वंश को सुखपूर्वक जीने लायक़ संपत्ति जोड़नी है, इसका एक ही उपाय है! पिछवाड़े के रीठा के पास जाकर एक बार और आत्महत्या का प्रयत्न करना ही। इस तरह के प्रयत्न के द्वारा दो बार उसका उपकार हुआ है।

यों विचार करके नागाभूषण आधी रात के वक़्त पेड़ के पास पहुंचा। उसी वक़्त अचानक पेड़ के ऊपर से एक ब्रह्म राक्षस उसके सामने कूद पड़ा और गरज कर पूछा "तुम फिर क्यों चले आये?"

ब्रह्म राक्षस को देखते ही नागभूषण की बोली बंद हो गई। बड़ी मुश्किल से उसने अपना गला संवारकर पूछा—"तुम कौन हो?"

"तुम जब मरने के लिए आये हो, ऐसी हालत में मुझे देख डरते क्यों हो? मैं ब्रह्मराक्षस हूँ। कई सालों से मैं इस पेड़ पर निवास करता हूँ। यदि तुम आत्महत्या न करते तो इस भयंकर रूप से मुक्ति मिल जाएगी और मैं स्वर्ग में पहुँच जाऊँगा। इसीलिए दो बार मैंने तुमको मरने से बचाया है।" ब्रह्मराक्षस ने जवाब दिया।

यह जवाब सुनने पर नागभूषण का डर जाता रहा और साथ ही उसके मन में ब्रह्मराक्षस के द्वारा थोड़ी और सहायता पाने की आशा जगी। उसने पूछा—"मेरी आत्महत्या और तुम्हारी स्वर्ग-प्राप्ति का संबंध कैसा?"

यह सवाल सुनकर ब्रह्मराक्षस ने लंबी सांस ली और बोला—"भगवान मनुष्य को थोड़ी-बहुत आयु देकर उसे जीने को कहते हैं; इसलिए अगर मनुष्य के सामने कोई तकलीफ़ आवे, तो हिम्मत के साथ उसका सामना करना चाहिए, लेकिन आत्महत्या जैसे प्रयत्न नहीं करने चाहिए। मैं तुम्हारा पुरखा हूँ। मैं भी कष्टों का सामना न कर सकने की हालत में आत्महत्या करके उस पाप के फल स्वरूप ब्रह्मराक्षस बन गया हूँ। मेरे वंश में मेरे बाद पांच पीढ़ियों तक कोई अगर आत्महत्या न करे तो मेरे पाप का परिहार होगा और मुझे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। मैं अपने वंश के किसी भी व्यक्ति की सिर्फ दो बार मदद दे सकता हूँ। अब तुम मेरे वंश की पांचवीं पीढ़ी के हो। मैंने दो बार तुम्हारी मदद की। इसलिए अब तुम आत्महत्या करके मेरे साथ इस पेड़ पर रह सकते हो या जिन्दगी भर हिम्मत के साथ अपने दिन बिताकर स्वर्ग में भी मुझ से मिल सकते हो।" यों कहकर वह फिर पेड़ पर चला गया।

इसके बाद नागभूषण ने फिर कभी आत्महत्या का प्रयत्न नहीं किया।
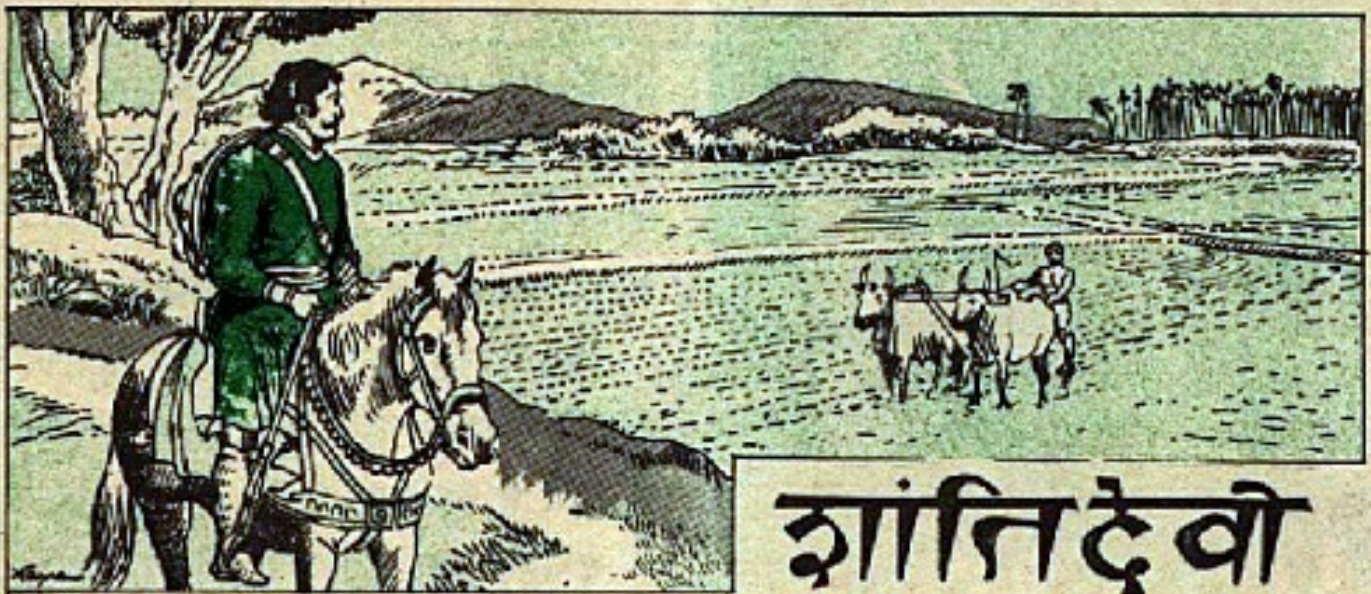
शांतिदेवी

प्राचीन काल में कुछ लोग तलवार का आश्रय लेकर जीवनयापन करते थे, माने तलवार धारणकर युद्धों में भाग लेकर अपनी ज़िंदगी बिता देते थे।

इस प्रकार अनेक युद्धों में एक महान वीर के रूप में शूरसिंह ने भाग लिया। कुछ साल बाद उसकी नौकरी छूट गई। इसकी वजह यह थी कि राजा लड़ाइयों से ऊब उठे। वे लोग आपस में समझौते कर लेते थे। अस्त्र-शस्त्रों को आयुधागारों में बंद कर दिया। राज्य में अगर शांति क़ायम हो जाती है तो लड़ाइयों की ज़रूरत नहीं होती है न! इसी तरह सैनिकों की भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

अब शूरसिंह के सामने बड़ी भारी समस्या पैदा हो गई। वह सिर्फ़ एक ही काम जानता था—वह यह था—तलवार धारण करके सर काटने का। अब लड़ाई की ज़रूरत नहीं थी और वह दूसरा काम जानता न था।

शूरसिंह अक्सर सोचा करता—"सभी राजा कायर हो गये हैं! सारी जनता पौरुष खो बैठी है! अब मेरी तलवार की क्या कोई उपयोगिता नहीं है? तलवार में शायद अब जंग लगनी है!"

चाहे जो हो, खाना-कपड़े के अभाव में शूरसिंह चिंता के मारे घुलने लगा। उसका घोड़ा भी घास-दाने के अभाव में कमजोर होता गया। आखिर लाचार होकर शूरसिंह नौकरी की खोज में चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक दिन सूर्योदय के वक़्त एक खेत के पास पहुँचा। उस खेत को जोतनेवाले किसान को पुकार कर शूरसिंह घोड़े पर बैठे-बैठे ही बोला—"क्या तुम ने कभी मेरा नाम नहीं सुना? मैं

२५ वर्ष पहले की चन्दामामा की कहानी

उनके सर काटकर तुम्हारे सामने डाल दूंगा। इसके बदले में तुम मेरे वास्ते खाना और मेरे घोड़े को घास का इंतजाम करो, बस, मैं कुछ और नहीं चाहता।"

किसान चुप रहा। पल भर शूरसिंह की ओर देखता रहा, फिर वह खेत जोतने के काम में जुट गया।

शूरसिंह मन ही मन सोचने लगा— "छी, ये लोग भी कैसे मर्द हैं? मानव का जन्म लेने के बाद क्या कोई उस का दुश्मन ही न होगा? उस का संहार करना न जाने कोई बात नहीं, पर मुझे हल जोतकर पेट भरने को कहता है। यह कायर किसान! क्या मुझ जैसे योद्धा के द्वारा किया जाने वाला काम है यह?"

यों सोचकर वह एक जंगल के रास्ते पर चल पड़ा। आखिर उसे एक मैदान दिखाई दिया। उस मैदान में एक ऊंचे स्थान पर एक देवी की मूर्ति थी। वही युद्ध देवी थी! इस पर उत्साह में आकर घोड़े को दौड़ाते जाकर शूरसिंह उस मूर्ति के सामने खड़ा हो गया।

देवी की वह मूर्ति बीस फुट की ऊंचाई पर थी। उसकी आंखें ऐसे दीख रही थीं, मानो आग उगल रही हों। उसके हाथ में पैनी तलवार डर पैदा करती थी। देवी के हाथ में तलवार को देखते ही

शूरसिंह हूँ। एक महान वीर योद्धा हूँ। इस वक़्त मैं बेकार हूँ। क्या मुझे कोई काम दिला सकते हो?"

यह सवाल सुनते ही किसान ने खेत जोतना बंदकर झट मुड़कर शूरसिंह की ओर देखा। म्यान में तलवार देख किसान डर गया, साथ ही उसे शूरसिंह पर दया आई। उसने कहा—"अगर हल जोतना जानते हो, तो मेरे पास काम जरूर है। पहले उस ढाल, तलवार को फेंककर मेरे पास आ जाओ!"

इस पर शूरसिंह ने जवाब दिया—"हल जोतना मैं नहीं जानता। अगर तुम्हारे कोई दुश्मन हो तो बताओ, पल भर में

शूरसिंह उत्साह के मारे उछल पड़ा। वह उमंग में आकर चिल्ला उठा–"ओह, कैसी मूर्ति है ! खरे सोने से निर्मित है।"

"नहीं भाई, सारी मूर्ति चांदी की बनी है। यह रजत मूर्ति है, सोने की मूर्ति बिलकुल नहीं है।" जवाब में उसे ये शब्द सुनाई दिये।

इस पुकार के साथ उस मूर्ति के पीछे से तलवार और ढाल धारण किया हुआ एक घुड सवार आगे आया।

इस पर शूरसिंह पौरुष के मारे दांत मींचने लगा, साथ ही उसने म्यान से तलवार खींच ली।

"अबे, तुम मेरी बात का धिक्कार करते हो? जानते हो? मेरा नाम शू-र-सिंह है..." शूरसिंह गरज उठा।

दूसरा योद्धा परिहास पूर्वक हँस पड़ा, म्यान से तलवार खींचते हुए ललकार उठा–"अबे, तुम आँखों से अंधे मालूम होते-हो। सोना व चांदी के बीच फ़र्क तक न जानने वाले तुम्हारे साथ युद्ध करना सचमुच मुझे अपमान की बात मालूम होती है। मेरा नाम जानकर भी तुम ऐसा व्यवहार करते हो? मैं धीर सिंह हूँ। आओ, मेरे सामने आ जाओ! मैं तुम्हें अपनी तलवार की ताक़त का परिचय देता हूँ।"
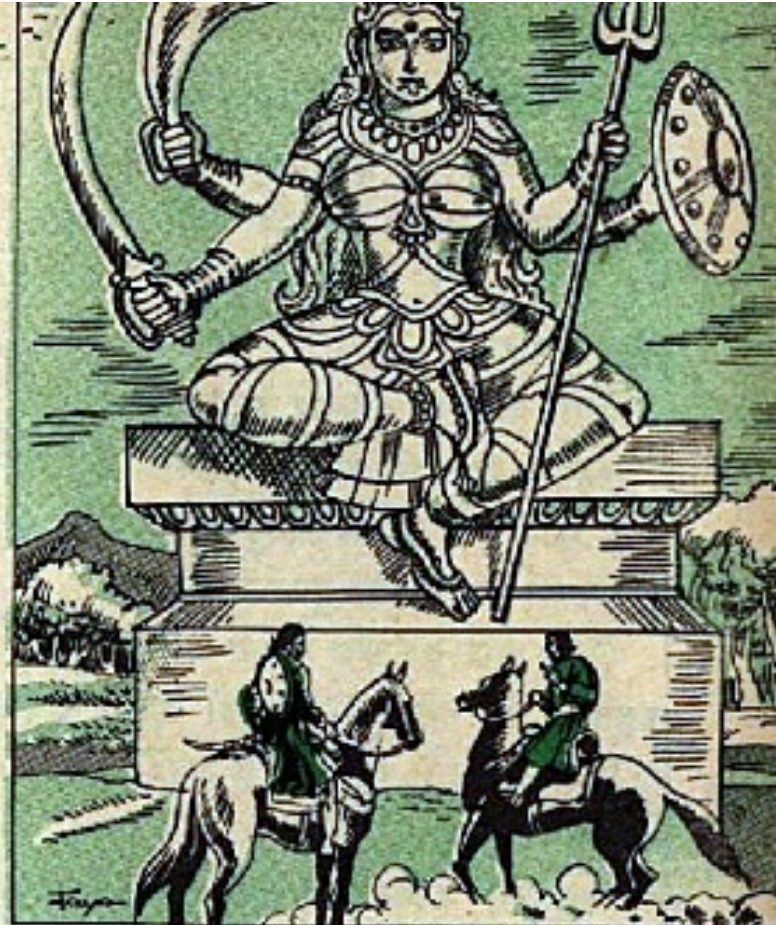
इस के बाद दूसरे ही क्षण दोनों योद्धा जूझ पड़े। तलवारों की टकराहटों, घोड़ों की हिनहिनाहटों तथा उन दोनों वीरों के गर्जनों के साथ वह सारा प्रदेश गूंज उठा। इतने में अकस्मात उन्हें यह पुकार सुनाई दी–"रुक जाओ, अपनी तलवारों को म्यानों में रख दो।" यह पुकार सुनकर दोनों वीरों ने विस्मय पूर्वक उस आवाज़ की दिशा में देखा।

चमेली जैसी सफ़ेद वस्त्र धारण कर एक सुंदर शांत सुंदरी मुस्कुराते हुए उनके पास आई और बोली–"इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि तुम दोनों महान योद्धा हो, असाधारण शूर-वीर हो!"

"इसकी बात में नहीं जानता, पर मेरा नाम शूरसिंह है!" शूरसिंह ने कहा।

"उसकी बाबत में कुछ नहीं जानता, पर मेरा नाम धीर सिंह है।" धीर सिंह ने कहा।

दोनों की ओर देखकर वह युवती बोली–"तुम्हारी तलवारों में जो प्रखरता है, उस में से थोड़ी सी भी अगर तुम्हारी बुद्धि में होती, तो यह झगड़ा हुआ न होता।"

"यह मूर्ख दूर की दृष्टि नहीं रखता, कहता है कि इस युद्ध देवी की मूर्ति चांदी से निर्मित है।" शूरसिंह ने दूसरे वीर का मजाक़ उड़ाया।

"इसकी दृष्टि ठेढी हो गई है। यह चाँदी की मूर्ति को स्वर्ण मूर्ति बताता है। यह बेवकूफ़ नहीं तो क्या है?" धीर सिंह ने परिहास किया।

इस पर वह युवती खिल-खिलाकर हंस पड़ी और दोनों योद्धाओं को अपने साथ लेकर मूर्ति की परिक्रमा कराई। मूर्ति को चाँदी से निर्मित कहकर हठ पूर्वक तर्क करनेवाले धीर सिंह को मूर्ति के एक तरफ़ सोने का मुलम्मा दिखाई दिया, मूर्ति को सोने की बताकर तर्क करने वाले योद्धा शूरसिंह को चाँदी का मुलम्मा चढ़ाया गया प्रतीत हुआ।

दोनों चकित हो एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। इतने में वह युवती अंतर्धान हो गई। वे दोनों उस युवती के वास्ते इधर-उधर ताकने लगे, तब उन्हें एक दिशा से यह ध्वनि सुनाई दी:

"योद्धाओ, में शांति देवी हूँ। तुम दोनों महान योद्धा हो। तुम दोनों के विचार सही हैं। झगड़ा बंद करो, झूठा पौरुष मत दिखाओ, शांति पूर्वक जीवन बिताओ।"

इस पर शूरसिंह और धीर सिंह अपने अपने घोड़ों पर से उतर पड़े और आपस में दोनों गले मिले। ढ़ाल और तलवारों को मूर्ति के आगे फेंक दिया। उस दिन से वे दोनों खेतीबारी को अपना पेशा बनाकर शांति पूर्वक अपने जीवन बिताने लगे।

हृदयपरिवर्तन

ब्रह्मदत्त जिन दिनों में काशी राज्य पर शासन करते थे, उन दिनों में बोधिसत्व ने उनके पुत्र के रूप में जन्म लिया। ब्रह्मदत्त ने उनका नामकरण शीलव किया।

कुछ साल बाद शीलव काशी के राजा बने। वे जनता को अपनी संतान की तरह मानते थे। गरीबी और अज्ञान की वजह से अगर कोई चोरी वगैरह अपराध करते तो उन्हें दण्ड देने के बदले उन्हें धन देते और उन्हें समझा कर वापस भेज देते थे। इस कारण राज्य में अपराधों की संख्या घट गई, साथ ही राजा के प्रति जनता के मन में अपार श्रद्धा और भक्ति बढ़ती गई।

काशी राज्य के समीप में कोसल राज्य पड़ता था। कोसल देश के मंत्री के मन में यह कुबुद्धि पैदा हो गई कि काशी राज्य को बड़ी आसानी से जीता जा सकता है। उसने अपने राजा को सलाह दी—"महाराज, काशी के राजा शीलव बड़े ही कमजोर हैं। वे डाकुओं तथा हत्यारों को भी दण्ड देने से हिचकिचाते हैं। ऐसे कायर राजा को हम आसानी से जीत सकते हैं।"

मंत्री की सलाह की सचाई का पता लगाने के ख्याल से कोसल राजा ने अपने कुछ सैनिकों को बुलाकर आदेश दिया—"तुम लोग काशी राज्य में घुसकर वहाँ के कुछ गाँवों को लूटकर चले आओ।"

कोसल देश के सैनिक जब काशी राज्य के गाँवों को लूटने गये, तब वहाँ की प्रजा ने एक साथ दुश्मन का सामना करके उन्हें बन्दी बनाया और राजा शीलव के सामने हाजिर किया।

शत्रु सैनिकों को देख राजा शीलव ने पूछा—"तुम लोग विदेशी जैसे लगते हो। हमारे गाँवों को लूटने के पीछे तुम्हारा उद्देश्य क्या है?"

जातक कथा

"महाराज, हमने अपनी भूख-प्यास मिटाने के ख्याल से यह अपराध किया है।" कोसल के सैनिकों ने जवाब दिया।

"अगर तुम लोग भूखे हो तो मुझ से क्यों नहीं पूछा?" यों कहकर काशी के राजा शीलव ने अपने खजाने से धन मंगवाकर उन्हें दे करके वापस भेज दिया।

शीलव के इस व्यवहार पर कोसल राजा की हिम्मत बंध गई। कोसल राजा ने इस बार और अधिक संख्या में काशी राज्य के नगरों को लूटने के लिए अपने सैनिकों को भेजा।

जब कोसल के सैनिक काशी राज्य की सीमा पार कर रहे थे, तब काशी राज्य की प्रजा ने उन्हें पकड़ लिया। इस बार भी राजा शीलव ने बन्दी सैनिकों को दण्ड दिये बिना उलटे उन्हें धन देकर भेज दिया।

इस पर कोसल राजा की हिम्मत और बंध गई। इस बार कोसल राजा अपनी सेना के साथ काशी राज्य पर हमला कर बैठे। जब यह समाचार भेदियों के द्वारा मिला, तब काशी राज्य के मंत्री और सेनापति अपने राजा शीलव के पास पहुँचकर बोले-"महाराज, लगता है कि कोसल राजा को हमारी सैनिक शक्ति का पता नहीं है। घमण्ड में आकर वे हम पर हमला करने जा रहे हैं। उनका सामना करने के लिए हमें आज्ञा दीजिए।"

पर काशी के राजा शीलव ने कोसल राज्य के साथ युद्ध करने की अनुमति नहीं दी। वे बोले-"नाहक़ खून बहाना मुझे पसंद नहीं है। अगर वे काशी का राज्य चाहते हैं, तो लेने दीजिये। उनके प्रवेश करने के लिए क़िले के दर्वाजे खोल कर रखिये।"

इसके बाद राजा शीलव ने अपने एक दूत के द्वारा कोसल राजा के पास समाचार भेजा-"आप हमारे शत्रु के रूप में नहीं, मित्र के रूप में ही आ सकते हैं।"

कोसल राजा ने इसे राजा शीलव की कमजोरी माना। काशी के राज दरबार में

प्रवेश करते ही अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे राजा शीलव और उनके मंत्रियों को बन्दी बनावे ।

राजा शीलव ने बड़े ही स्नेह पूर्वक कहा–"अतिथियों के द्वारा ऐसा व्यवहार करना न्याय संगत नहीं है।"

राजा शीलव की ये बातें सुनकर कोसल राजा खिलखिलाकर हँस पड़ा। इसके बाद उनके राजोचित चिह्नों को अपने सैनिकों के द्वारा निकलवा दिये।

राजा शीलव और उनके मंत्री काशी नगर को छोड़ जंगल के रास्ते जाने लगे। थोड़ी देर बाद अंधेरा छा गया। सब लोग जंगल में पेड़ों के नीचे लेट गये। उस रात को उन्हें खाना तक न मिला।

आधी रात के वक्त उनकी नींद टूट गई। कई डाकू अपने हाथों में मशाल लिये वहाँ पर आ पहुँचे। उन लोगों ने राजा शीलव से कहा–"महाराज, हम लोग डाकू हैं। आप की कृपा से आज तक हमें डाका डाले बिना खाना-कपड़ा मिल जाता था। पर आज से हमारी कठिनाइयाँ शुरू हो रही हैं। इसलिए आज रात को हम लोग राज महल में घुसकर यह सारी संपत्ति लूट ले आये हैं! लीजिये, ये आप की पोशाकें, राज चिह्न और तलवार-ढाल हैं! यह राजमहल का भोजन है! आप ये वस्त्र धारण कर लीजिए, खाना खाने के बाद हमें आदेश दीजिए कि हम यह सारी संपत्ति जो लूट ले आये हैं, इसे क्या किया जाय?"

राजा शीलव और उनके मंत्रियों ने खाना खाकर अपने अपने वस्त्र धारण किये; तब शीलव ने डाकुओं से कहा–"सब से पहले हमें यह जान लेना जरूरी है कि नये राजा तुम लोगों की समस्या को कैसे हल करने वाले हैं? इसे जाने बिना तुम लोगों का इस तरह पहले ही डाका डालने के लिए तैयार हो जाना उचित नहीं है। तुम लोग यह सारा धन ले जाकर राजा को सौंप दो, तब उनसे

पूछो कि तुम्हारी आजीविका के लिए वे कैसा इंतजाम करने वाले हैं!"

डाकू सब एक स्वर में बोले–"महाराज, आतिथ्य देनेवाले को डाकू जैसे लूटनेवाले के मन में न्याय का विचार नहीं होगा! हम उस नीच के पास नहीं जायेंगे। आप ही हमारे महाराजा हैं!"

"अगर तुम लोग नये राजा के पास न जाओगे तो मैं ही खुद यह धन लेकर उनके पास जाऊंगा।" शीलव ने जवाब दिया।

इसके बाद वे अपने मंत्रियों को साथ ले राजसभा में पहुँचे। शीलव को देख कोसल राजा चकित रह गया।

इस पर शीलव ने कोसल राजा को सारा वृतांत सुनाकर कहा–"महाराज, आप ने मुझसे भी ज्यादा न्यायपूर्वक जनता पर शासन करने के विचार से ही मुझे भगाकर मेरे सिंहासन पर अधिकार कर लिया है न? भोले-भाले डाकुओं ने इस बात को नहीं समझा, उल्टे यह सोचकर कल रात को आप का खजाना लूट लिया कि आइंदा उनकी आजीविका का कोई प्रबंध न होगा! मैंने उन्हें इस बात का आश्वासन दिया कि आप मुझसे भी कहीं ज्यादा न्यायपूर्वक उनकी समस्या को हल करेंगे, इसी विचार से मैं आपकी संपत्ति आप के हाथ सौंपने के लिए आया हूँ।"

ये बातें सुनने पर कोसल राजा के अन्दर हृदय-परिवर्तन हुआ। वह सिंहासन पर से उठ कर आया, शीलव के पैरों पर गिर कर बोला–"महात्मा, डाकू लोग तक आप के साथ प्यार करते हैं, आप का आदर करते हैं! आप की इस महानता को मैं समझ नहीं पाया। अपने दुष्ट व नीच मंत्री की सलाह सुनकर मैंने आप के साथ द्रोह किया है। मुझे क्षमा करके आप अपने राज्य पर शासन कीजियेगा! मैं सिर्फ़ आप की मैत्री चाहता हूँ।"

इस पर शीलव ने फिर काशी राज्य को स्वीकार कर लिया। तब कोसल राजा का उचित रूप से अतिथि-सत्कार करके उसको उसके राज्य में वापस भेज दिया।
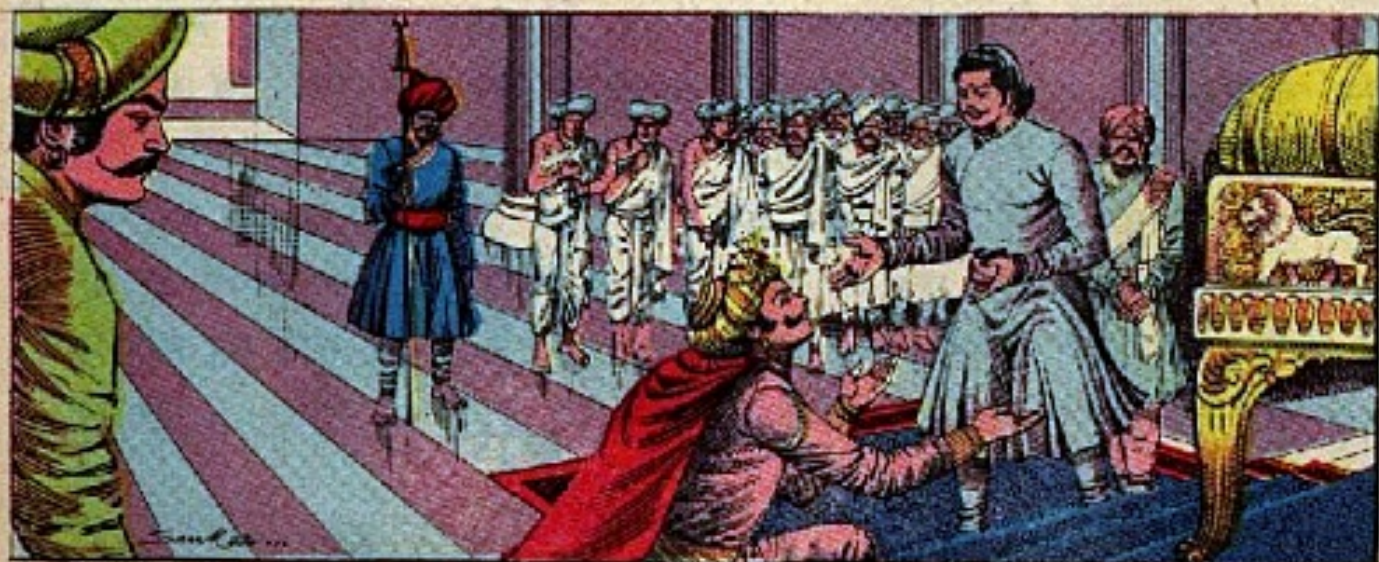
गजनी महम्मद के हमले

सिंधु प्रांत पर अरबों ने थोड़े समय तक ही राज्य किया, फिर भी वह दूसरे ढंग से उनके लिए फ़ायदेमंद ही रहा। वे लोग धन के साथ भारतीय दर्शन शास्त्र, वैज्ञानिक ग्रंथ, गणित और साहित्य के ग्रंथ भी अपने साथ ले गये।

भारत के महान वैभव ने अरबों को अचरज में डाल दिया। यहाँ का कल्पना प्रधान साहित्य, नीति कथाएँ, इतिहास वगैरह से उनको बड़ा आनंद मिला। उनके द्वारा यह कथा साहित्य कुछ हद तक यूरोप के देशों में पहुँचा।

खलीफ़ा हरून अल रशीद के दरबार में भारत देश के पंडितों, ज्योतिषियों और जादूगरों को बड़ा आदर मिलता था। अरब के विद्वानों ने भारत के गणित शास्त्र का खासकर खगोल शास्त्र का बड़े ही कौतूहल के साथ अध्ययन किया।

धीरे-धीरे सिंधु प्रांत पर अरबों का अधिकार कमजोर पड़ता गया। लेकिन वे भारत देश की धन-संपत्ति की बात भूल नहीं पाये। दसवीं सदी में गजनी पर राज्य करने वाले महम्मद ने अपने को खलीफ़ा का प्रतिनिधि घोषित किया और भारत पर हमला कर बैठा।

उन दिनों में पश्चिमी पंजाब पर जयपाल नामक राजा राज्य करते थे। सुलतान महम्मद ने अपने सैनिकों को यह बताकर उनमें उत्साह भर दिया कि वह अपने मजहब को फैलाने के लिए यह हमला कर रहा है और उसने राजा जयपाल के राज्य पर चढ़ाई कर दी।
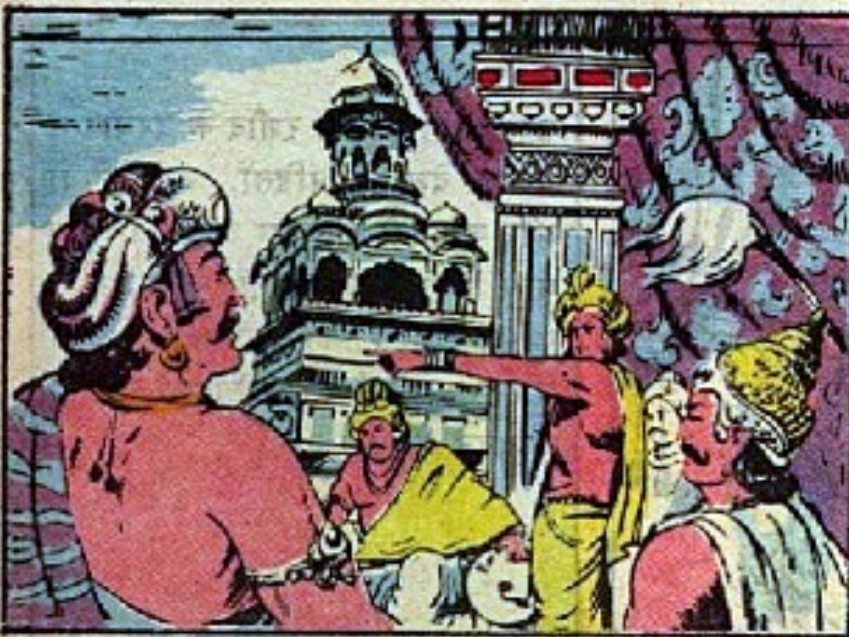
जयपाल अपनी सेना के साथ पेशावर के समीप में महम्मद का सामना करके हार गये। इस अपमान से निराश हो उन्हों ने आग में कूदकर अपने प्राण दे दिये। इस पर उनके पुत्र आनंदपाल ने उज्जयिनी, ग्वालियर, कलंजर, और कनौज के राजाओं को अपने साथ मिलाया, और दुश्मन का सामना करने के लिए तैयार हो गये।

महम्मद ने फिर एक बार भारत पर हमला किया। आनंदपाल ने अपने मित्र राजाओं की मदद से साहस के साथ महम्मद का सामना किया। उस लड़ाई में जयपाल का हाथी घायल होकर युद्ध भूमि से भागने लगा। इसे देख उनके मित्रों ने सोचा कि आनंदपाल हार गये हैं और वे युद्ध भूमि से लौट पड़े।

इस तरह विजय पाने वाले महम्मद ने राज महलों, नगरों और मंदिरों को तोड़ डाला और भारी तादाद में लोगों के प्राण ले लिये। थोड़े ही अर्से में उसने पंद्रह बार हमला करके मुलतान, मथुरा, और कनौज नगरों का सर्वनाश किया, और साथ ही भारी अमूल्य संपत्ति और सामग्री को लूट ले गया।

गजनी महम्मद का प्रलोभन, क्रूरता और धार्मिक अंध विश्वास सीमा से परे है। उसने प्रभास में स्थित सोमनाथ मंदिर की अपार संपत्ति के बारे में सुना और उसे लूटने गया। लेकिन उस वक्त गुजरात के शासक चालुक्य राजा उसके इस हमले का सामना करने की शक्ति नहीं रखते थे।

सोमनाथ मंदिर के पुजारियों ने महम्मद से पूछा कि कम से कम वह गर्भ गृह को नष्ट करने से छोड़ दे। लेकिन उसने बड़ी क्रूरता के साथ उन में छिपाई गई संपत्ति की खोज कराई।

कई वर्षों से भक्तों के द्वारा समर्पित अमूल्य उपहार अनेक कमरों में सुरक्षित रखे गये थे। वे खासकर सोने के आभूषण तथा रत्न थे। उतनी सारी संपत्ति को एक साथ देख महम्मद एकदम चकित रह गया। उस संपत्ति को लूटने के बाद उसने मंदिर को ध्वस्त करने का अपने सिपाहियो को आदेश दिया।

महम्मद की वापसी यात्रा में युद्ध-प्रेमी जाटों ने उस पर हमला करके उसे कमजोर बनाया। उसने जो संपत्ति लूटी, उसके साथ वैभव पूर्वक उसे जिंदगी बिताने का मौका नहीं मिला। जल्द ही वह बीमार पड़ा और ई. सन् १०३० में मर गया। लेकिन उसकी क्रूरता भारत के इतिहास में कभी न भरने वाला घाव बनकर रह गया।

नग्न सत्य

किसी गाँव में कन्हैयालाल नामक एक अमीर आदमी था। उसके चार बेटे थे! वे अपने पिता के प्रति अच्छी श्रद्धा व भक्ति रखते थे, लेकिन जब-तब छोटी सी बातों को लेकर झगड़ा करते थे। कन्हैयालाल एक बार बीमार पड़ा। उसे इस बात का डर सताने लगा कि अब वह चंगा नहीं हो सकता। उसकी सब से बड़ी इच्छा थी कि उसके अनंतर भी चारों बेटे मिलकर रहे।

कान्हैयालाल के मकान के सामने खाली मैदान में एक सांड स्वेच्छा पूर्वक घूमा करता था। अमीर आदमी ने अपने बड़े बेटे के हाथ एक रस्सा देकर उस सांड को द्वार तक पकड़ लाने का आदेश दिया।

बड़े बेटे ने सांड के गले में रस्सा डालकर खींच लाना चाहा, पर एक ही झटके में वह रस्से को तोड़कर भाग गया। इस पर अमीर ने चार रस्से अपने बेटों को दिखाकर उन्हें एक रस्से के रूप में बटने को कहा, बेटों ने ऐसा ही किया। इसके बाद सब से छोटे ने जाकर उस रस्से से सांड को बांध दिया और द्वार तक खींच ले आया।

इस पर कन्हैयालाल ने अपने चारों बेटों को समझाया—"वह घमण्ड़ी सांड तुम लोगों की ज़िंदगी में उपस्थित होने वाली तक़लीफ़ों तथा नुक़सानों का प्रति रूप है, जैसे एक रस्सा उसे क़ाबू में न रख पाया, वैसे ही तुम लोग भी अलग-अलग रहकर उन का सामना नहीं कर सकते! इस सत्य को कभी मत भूलो।"

—"कमला परमगुरु"

ईर्ष्या का फल

एक राजा के यहाँ रामू और सोमू नामक दो माली थे। एक दिन रामू पेड़ों के थांवलों में पानी सींच रहा था, तब उसे कोई चीज चमकती दिखाई दी। रामू ने उस चीज़ को हाथ में लेकर देखा। वह एक सोने का हार था। मगर कई दिन मिट्टी में दबे रहने की वजह से उसकी चमक साफ़ नज़र नहीं आ रही थी।

रामू उस हार को पानी से साफ़ करके राजा के पास ले गया और उन्हें बताया कि उसे वह हार कैसे मिल गया है। राजा उसे अंत:पुर में ले गये, दरियाफ़्त करनें पर पता चला कि थोड़े दिन पहले राजकुमारी ने जो हार खो दिया था, वही यह है।

राजा ने सभी नौंकरों के सामने रामू की ईमानदारी की तारीफ़ की और उसे सौ सोने के सिक्के इनाम में दे दिये।

राजा के द्वारा रामू की तारीफ़ होते, उल्टे उसे इनाम पाते देख सोमू को बड़ा दुख हुआ। वह पहले से ही रामू से नफ़रत करता था। वैसे माली के रूप में उसे जो तनख्वाह मिलती थी, उस से उस की ज़िंदगी मजे में कट जाती थी, फिर भी उसके मन में इधर कई दिनों से यह इच्छा बढ़ती गई कि किसी तरह से राजा को प्रसन्न बनाकर राज दरबार में कोई बड़ी नौकरी प्राप्त करे। पर बहुत कोशिश करने के बावजूद भी उसे कभी राजा के सामने जाने का मौक़ा नहीं मिला।

फिर भी वह अक्सर अपनी पत्नी से कहा करता था–"राजा के साथ एक बार उसे बातचीत करने का मौक़ा मिल जाय तो वह अपनी अक़्लमंदी से राजा को खुश करके बड़े ओहदे पर पहुँच सकता है। माली का काम ज़िन्दगी भर भी करे तो

शिवनारायण वर्मा

क्या फ़ायदा? न धन मिलेगा और न यश ही।"

अब राजा के द्वारा रामू की तारीफ़ होते देख सोमू के दिमाग में तरह-तरह के विचार पैदा होने लगे। उसने यह बहाना बनाकर एक हफ़्ते की छुट्टी ली कि आजकल उसकी तबीयत ठीक नहीं रहती। इस बीच गंभीरता पूर्वक सोचकर उसने एक योजना बनाई।

इसके बाद सोमू ने अपनी पत्नी को किसी तरह समझा-बुझाकर उसके गले की सोने की माला ले ली और उसे ले जाकर एक पेड़ के थांवले में गाड़ दिया। इसके चार-पांच दिन बाद सोमू उस माला को राजा के पास ले गया और उन्हें बताया कि जब वह बगीचे में पेड़-पौधों को पानी सींच रहा था, तब वह माला उसे बगीचे में मिल गई।

इस पर राजा उसी वक़्त रानी के पास गये और क्रोध में आकर बोले–"तुम लोग इधर बहुत लापरवाह रहती हो। अक्सर हमारे उद्यान वन में गहने खो बैठती हो। आइंदा सावधान रहो।"

रानी ने उस माला को हाथ में लेकर अंतःपुर की सारी औरतों से पूछा, पर सब ने यही बताया कि वह माला उनमें से किसी की नहीं है।

राजा आश्चर्य में आ गये। दूसरे दिन सुनार को बुलाकर माला की जांच करने का आदेश दिया।

सुनार ने माला की जांच करके बताया– "महाराज, यह माला खरे सोने से बनाई गई नहीं है। यह अंतःपुर की नारियों की माला कभी नहीं हो सकती।"

इस पर राजा सोच में पड़ गये। उद्यान वन में अंतःपुर की नारियों को छोड़ बाहर की महिलाओं के आने की कोई गुंजाइश नहीं है। इस कारण राजा के मन में यह शक हुआ कि कहीं इस मामले में माली सोमू की कोई चाल तो नहीं है?

उस दिन रात को राजा के द्वारा तैनात एक राज भट सोमू के घर पर निगरानी रखे रहा। आधी रात के करीब पति-पत्नी के बीच कोई झगड़ा शुरू हो गया।

सोमू की पत्नी गुस्से में आकर कह रही थी–"मेरे मना करते रहने पर भी तुमने मेरे गले की माला ले जाकर राजा के हाथ दे दी। अब राजा हमें इनाम कब देने वाले हैं?"

"जल्दबाजी न करो। वे तो अभी कई खास कामों में डूबे हुए हैं। जब वे इस बात का पता लगायेंगे कि वह माला अंतःपुर की किसी भी नारी की नहीं है, तब उसे खजाने में भेजकर मुझे रामू से दुगुना इनाम देंगे। अगर हमारी क़िस्मत अच्छी रही तो बड़ी नौकरी भी मिल सकती है!" सोमू ने समझाया।

राजभट ने सवेरे जाकर यह खबर राजा को दी। राजा ने सोमू को बुलवाकर पूछा–"तुम्हारे हाथ जो माला लगी, वह अंतःपुर की एक महरिन की है, इसलिए हमने उसे दे दी है। उसने तुम्हारी ईमानदारी पर खुश होकर अपनी शक्ति के अनुरूप इनाम भेजा है। वह इनाम कहाँ?" यह कहते राजा ने एक भट की ओर देखा।

राजभट एक कमरे के अन्दर चला गया और एक नया झाड़ू लाकर उसने सोमू के हाथ दिया।

सोमू थोड़ी देर तक अवाक् रह गया, फिर राजा को प्रणाम करके अपना सिर झुकाये लज्जा के मारे अपने घर की ओर चल पड़ा।

वेष और गुण

जगदलपुर में एक बार डाकुओं का बोलबाला हद से ज्यादा हो गया। उन्हें बन्दी बनाने में जब कोतवाल असफल हुआ, तब उसने सिपाहियों को डाकुओं जैसे पगड़ियाँ व तलवार देकर डाकुओं को बन्दी बनाने का आदेश दिया।

उसी समय डाकुओं के सरदार ने सोचा कि अपने अनुचरों को सिपाहियों का वेष धारण करवा दे तो बड़ी आसानी से चोरियाँ की जा सकती है, इसलिए उन्हें सिपाहियों के वेष धारण करवा दिया।

एक दिन जंगल के रास्ते में दोनों दलों की मुलाक़ात हो गई। डाकुओं के वेष में रहनेवाले सिपाहियों ने सिपाहियों के वेष में रहनेवाले डाकुओं से पूछा–"क्या आज कोई हाथ लगे?"

सिपाहियों के वेष में रहनेवाले डाकुओं ने जवाब दिया–"कोई नहीं मिला। तुम लोगों को क्या कोई मिल गया?"

"हमारी भी यही हालत है।" डाकुओं के वेषधारी सिपाहियों ने कहा।

इसके बाद दोनों दल अपने-अपने रास्ते चले गये। इसके बाद सिपाहियों ने कोत्वाल से मिलकर बताया कि जंगल के रास्ते में उन लोगों ने कुछ सिपाहियों को देखा है।

कोत्वाल ने आश्चर्य में आकर कहा–"तुम लोग निरे बेवकूफ़ हो! अगर वे सचमुच सिपाही होते तो डाकुओं के वेष में रहनेवाले तुम लोगों को पकड़कर ले जाते, लेकिन वे लोग छद्म वेषधारी डाकू हैं।"

डाकुओं के सरदार ने भी अपने अनुचरों की बातें सुनकर कहा–"अरे वज्र मूर्खो, तुम लोगों ने डाकू वेषधारी सिपाहियों को देखा है। ऐसी बात न होती तो सिपाहियों के वेष में रहनेवाले तुम लोगों को देख वे लोग भाग जाते। हमने वेष तो बदल लिये, पर हमारे और उनके गुणों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।"

अनोखी आँखें

शिवपुरी के किसान दामोदर का लड़का सोमनाथ दो साल की उम्र में ही अच्छी तरह से बात करने लगा। एक दिन उसने अपने पिता के हाथ में डिबिया को देख कहा—"पैसा, पैसा।"

डिबिया के अंदर सचमुच पैसे थे। दामोदर की समझ में न आया कि यह बात लड़का कैसे समझ गया। उसी वक्त दामोदर की बीबी लक्ष्मी रसोई घर से चली आई और लड़के को गोद में लिया।

सोमनाथ दीवार से सटे लकड़ी के एक बक्से को दिखाते हुए चिल्ला उठा—"सांप, सांप!" इस पर पति-पत्नी पहले थोड़ा सा घबरा गये, फिर अजरज में आकर बक्से की ओर देखा। बक्से का ढक्कन धीरे-धीरे हिलने लगा।

दामोदर बक्से को गली में ले गया और उसे औंधे मुँह डालकर हाथ में लाठी ले तैयार खड़ा हो गया। उसी वक़्त पुराने कपड़ों के अन्दर से एक सांप बाहर निकला। दामोदर ने उसे लाठी से मार डाला।

दामोदर सोचने लगा कि लड़का सोमनाथ डिबिया के अन्दर के पैसों और बक्से के भीतर के सांप की खबर दे सका, इसके पीछे कोई खासियत है। यों विचारकर उसने सोमनाथ की आँखें बचाकर गुड़ का एक टुकड़ा अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया और लड़के से पूछा—"इस मुट्ठी के अंदर क्या है?"

"गुड़ है!" सोमनाथ ने झट जवाब दिया। सोमनाथ के माँ-बाप ने सोचा कि लड़के के अंदर कोई शक्ति प्रवेश कर गई है। इतने में सोमनाथ चिल्ला उठा—"भैंस, भैंस।"

कमरे के अन्दर भैंस कैसा? यों अश्चर्य करते हुए दामोदर ने बाहर जाकर देखा।

राधेश्याम गुप्त

दीवार के उस पार एक भैंस खड़ी थी। इस पर दामोदर को यक़ीन हो गया कि उसके बेटे की आँखों में कोई ताक़त है! ऐसी ताक़त के द्वारा धन कमाना बड़ा सरल है। यों विचारकर लड़के के माँ-बाप ने सोमनाथ की इस शक्ति को गुप्त रखने का निश्चय किया। उस दिन से वे सोमनाथ को कहीं अकेले बाहर जाने नहीं देते थे। साथ ही उसकी आँखों पर पट्टी बांधकर सामने वाली तथा दीवार के उस पार वाली चीज़ों का पता जानकर खुश हो जाते थे।

एक दिन दामोदर ने सब को बताया कि वह अपने लड़के के द्वारा एक अनोखा प्रदर्शन कराने जा रहा है। भारी भीड़ जमा हुई। सोमनाथ की आँखों पर पट्टी बांध-दी गई। तब उस लड़के ने वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों की जेबों तथा पगड़ियों में जो चीजें छिपा रखी थीं, सब को सही ढंग से बताया। इसके बाद सोमनाथ की इस अनोखी शक्ति का प्रचार आस-पास के गाँवों में भी होने लगा। सोमनाथ की इस शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए थोड़ा-बहुत शुल्क वसूल करते दामोदर गाँवों में घूमने लगा। इस तरह वह बड़ा अमीर हो गया।

एक दिन रात को दामादर जिस सराय में ठहरा था, उस में चोर घुस आये और सोमानाथ को उठा ले गये। दामोदर और उसकी पत्नी इस बात का रहस्य न जानने की वजह से दुखी होने लगे कि चोर धन को छोड़ बच्चे को क्यों उठा ले गये? उसी समय राजा के यहाँ से उन्हें बुलावा आया।

इस पर पति-पत्नी राजधानी में गये और राजा के दर्शन करके उन्हें सारा वृत्तांत सुनाया। राजा ने उन्हें सांत्वना देकर कहा—"मैंने तुम लोगों के बारे में पहले ही सुना है, लेकिन आज तक उसे कोई जादू-टोना समझकर मैंने उस पर यक़ीन नहीं किया। शायद चोर यह सोचकर तुम्हारे लड़के को उठा ले गये होंगे कि तुम्हारे लड़के की अनोखी शक्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए किया जा सकता

है। मैं तुम्हारे लड़के को खोजने का इंतजाम करूँगा।"

इसके थोड़े दिन बाद एक व्यापारी अपने नौकरों के साथ जंगल के रास्ते यात्रा कर रहा था। रास्ते में एक डाकू दल ने उनको घेर लिया। डाकुओं का सरदार जिस घोड़े पर सवार था, उस पर एक लड़का भी था। चोरों के सरदार ने व्यापारी के नौकरों के सर पर के बक्सों को दिखाकर लड़के से पूछा—"किस बक्से में धन है?"

लड़के ने एक नौकर की ओर इशारा करके बताया—"उसके सर पर के बक्से में गहने हैं।" चोरों के सरदार का आदेश पाकर उसके अनुचर उस बक्से को लेकर चले गये, लेकिन जब वे अपने डेरे पर पहुँचे, तब उन्हें मालूम हुआ कि वे गहने सब नकली हैं। सरदार ने गुस्से में आकर लड़के से पूछा—"अरे सोमनाथ, ऐसी बड़ी अनोखी ताक़त रखने वाली तुम्हारी आँखों को क्या इस बात का पता नहीं है कि कौन सा सोना खालिस है और कौन नकली?"

इस बीच राजा के सिपाहियों नें चोरों के निवास को घेर लिया। व्यापारी के वेष में रहने वाले सेनापति शूरवर्मा ने चोरों को आदेश दिया कि वे अपने हथियार डाल दे, तब चोरों के सरदार से कहा—"अरे, गंगाधर सिंह, काफी अनुभव रखने वाले तुम व्यापारी के वेष में रहने वाले सेनापति को पहचान नहीं पाये; तुम्हारे डेरे

का पता लगाने के ख्याल से ही मैंने इसके पहले तुमको बन्दी नहीं बनाया।"

अधिक संख्या में रहने वाले सैनिकों को देख चोरों ने चुपचाप सेनापति के हाथ अपने को सौंप दिया। शूरवर्मा ने चोरों को बन्दी बनाया, तब सोमनाथ को अपने घोड़े पर बिठाकर राजधानी पहुँचा।

राजा रघुवर्मा ने दामोदर दंपति को बुलवाकर समझाया-"हमारे सैनिक तुम्हारे लड़के को चोरों के हाथ से छुड़वाकर ले आये हैं। हमारे राज्य में चोरों के और दल हैं। इस बार दूसरा दल तुम्हारे लड़के को उठा ले जाने का प्रयत्न कर सकता है। इसलिए सोमनाथ हमारी देखरेख में ही पलेगा। तुम लोग हफ़्ते में एक बार आकर अपने लड़के को देख सकते हो।"

राजा के सुझाव को दामोदर दंपति ने मान लिया। सोमानाथ अपनी बीस साल की उम्र तक राजा की देखरेख में पलता रहा। राजा रघुवर्मा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र शक्तिवर्मा राजा बन बैठा।

शक्तिवर्मा ने एक दिन सोमनाथ को बुलावाकर पूछा-"आज तक तुम हमारे राज्य की देखरेख में पलते रहे। शिक्षा के साथ तुमने युद्ध-विद्याएँ भी सीख लीं। अब अपनी जीविका का कोई उपाय करना है न? बताओ, तुम क्या करना चाहते हो?"

सोमनाथ ने पल भर सोचकर कहा- "महाराज, अगर आप अनुमति दे तो मैं

थोड़े दिन तक देशाटन करना चाहता हूँ।" शक्तिवर्मा ने मान लिया और उसके खर्च के लिए धन भी दिया। सोमनाथ देशाटन करते एक गाँव में बीमार पड़ गया। इस पर वह एक वैद्य के पास पहुँचा। उस वक़्त जगन्नाथ नामक वैद्य एक ऐसे मरीज की जांच कर रहा था जो पेट-दर्द के मारे परेशान था।

"वैद्यजी, आपको इस मरीज की ज्यादा जाँच करने की जरूरत नहीं है। इसके पेट में बायीं तरफ़ एक फोड़ा निकल आया है।"

वैद्य ने आश्चर्य में आकर पूछा—"शायद आप सोमनाथ तो नहीं हैं?"

सोमनाथ ने मान लिया। इसके बाद वैद्य ने सोमनाथ को अपने ही घर पर ठहरा कर उसका उचित रूप में इलाज किया। उन दिनों में सोमनाथ ने भी मरीजों की बीमारियों का निदान करने में वैद्य की बड़ी मदद पहुँचाई।

बुखार के उतरने पर सोमनाथ राज्य के सीमा प्रांत में पहुँचा। वहाँ पर राज्य का एक अधिकारी सीमा पार कर आनेवाले लोगों के धान के बोरों की गाड़ियों के विवरण लिख रहा था।

सोमनाथ उस अधिकारी के पास जाकर एक गाड़ी की ओर इशारा करते हुए बोला—"महाशय, धान के उन बोरों में धान के बीच हीरे छिपाये गये हैं।"

इस पर अधिकारी ने खीझकर कहा—"सावधानी से जाँच करने के बाद ही हमने यह निश्चय कर लिया कि ये सब धान के बोरे हैं। तुम कौन हो? सोमनाथ थोड़े ही हो?"

"हाँ, मैं सोमनाथ ही हूं।" सोमनाथ ने शांति पूर्वक जवाब दिया।

सोमानाथ का नाम सुनते ही वह अधिकारी घबरा गया और अपने नौकरों के द्वारा बोरों की जाँच करवाई, तब बोरों के भीतर से बहुत से हीरे निकल आये। इस पर अधिकारी ने सोमनाथ से क्षमा

माँग ली और नियम के विरुद्ध राज्य से हीरों को बाहर ले जानेवाले व्यापारी को बन्दी बनाया। इसके बाद सोमनाथ वहाँ से चल पड़ा। कुछ दिन बाद राजधानी पहुँचकर राजा शक्तिवर्मा के दर्शन करने गया।

"तुमने बहुत समय तक देशाटन किया! अब बताओ, तुमने किस पेशे को अपनाने का निश्चय कर लिया है?" राजा ने पूछा।

"महाराज, हमारे राज्य के सीमा प्रांत में इधर-उधर चोरी से निषिद्ध चीज़ों को पहुँचाया जा रहा है। मुझ जैसे व्यक्ति को उसे रोकना बड़ा आसान है। आप कृपया मुझे वह नौकरी दिला दीजिए।" सोमनाथ ने कहा।

"हाँ, हाँ, यह नौकरी तुम्हारी शक्ति के लिए बिलकुल ही अनुकूल लगती है। साथ ही वहाँ पर में एक वैद्यालय भी बनवाना चाहता हूँ। वहाँ के वैद्यों की सहायता तुम इसी प्रकार करते रहो जैसे इसके पहले तुमने एक गाँव में एक वैद्य की सहायता की थी। बीमार लोग जल्दी अच्छे हो जायेंगे।" राजा शक्तिवर्मा ने कहा। सोमनाथ ने विस्मय में आकर पूछा—"महाराज, आपको कैसे मालूम हुआ कि मैंने अमुक गाँव में एक वैद्य की मदद की है?"

राजा ने मुस्कुराकर कहा—"तुम्हारी अनोखी आँखों का समाचार तुमसे ज्यादा और लोग ही जानते हैं! तुम्हारे देशाटन करते समय तुमको चोरों का एक और दल उठाकर न ले जाये, इस ख्याल से मैंने तुम्हारे पीछे कुछ भेदियों को भेजा था।"

इसके बाद राजा ने सोमनाथ को सीमा प्रांत के अधिकारी के पद पर नियुक्त करते हुए आदेश-पत्र भेजा। सोमनाथ ने नौकरी पाकर अपने गाँव के एक निकट रिश्तेदार की लड़की के साथ शादी की और अपने माँ-बाप के साथ सीमा प्रांत में पहुँच कर वहीं अपना स्थिर निवास बनाया और सुखपूर्वक अपना शेष जीवन बिताया।
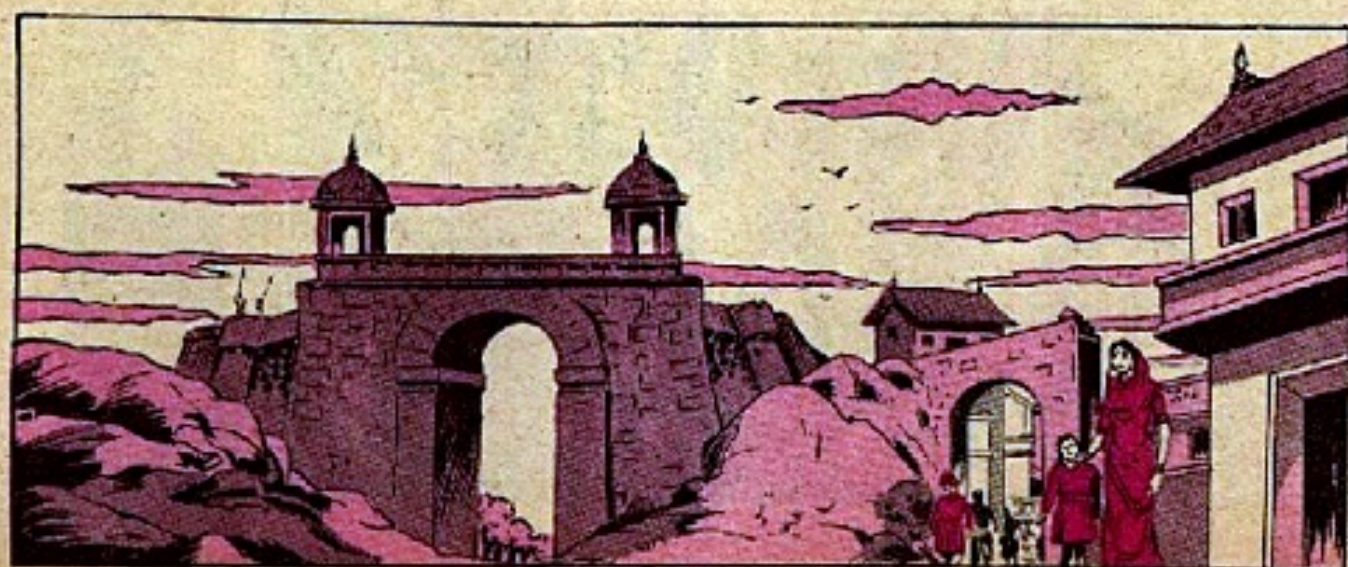
अक़्लमंद

विदर्भ देश के राजा के मन में इस बात का भ्रम था कि वह सब से ज्यादा अक़्लमंद है। यही सोचकर वह जब-तब दरबारियों से बेमतलब के सवाल पूछा करता था। एक बार राजा ने दरबारियों से कहा—"जो आदमी इस सवाल का जवाब दे कि दुनिया में सबसे ज्यादा अक़्लमंद कौन है? उसे एक हज़ार सोने के सिक्के पुरस्कार में दूंगा।"

कई लोगों ने राजा का नाम बताया, पर राजा ने कहा—"सिर्फ़ नाम बतलाने से काम नहीं चलेगा, उदाहरण भी देना चाहिए।" इस पर विदूषक ने उठकर कहा—"महाराज, बचपन में मेरे पिताजी ने मुझसे कहा था कि जो व्यक्ति सिर्फ़ इस एक सवाल का जवाब दे सकता है, वही दुनिया में सब से बड़ा अक़्लमंद माना जाएगा।" राजा ने कौतूहल में आकर पूछा—"वह सवाल क्या है?"

"मानव के शरीर के लिए मृत्यु है, पर आत्मा के लिए नहीं है। हम जैसे पोशाकें बदला करते हैं, वैसे आत्मा शरीरों को बदला करती है। पर मेरे पिताजी का सवाल था कि एक शरीर को छोड़नेवाली आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करने के पहले कितने समय तक विश्राम लेती है?" विदूषक ने जवाब दिया।

इस सवाल का कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर राजा ने विदूषक से जवाब देने को कहा। तब उसने दीनतापूर्ण चेहरा बनाकर यों कहा—"मेरे पिताजी ने मुझे अकेले को ही उसका जवाब बताया है। यह शाप है कि यह जवाब मेरे वंशवालों को छोड़ दूसरों को नहीं बताना है। इस वक़्त मेरे पिताजी जीवित नहीं हैं, इसलिए उस सवाल का जवाब सिर्फ़ मैं ही अकेला जानता हूँ। इस कारण दुनिया में सब से बड़ा अक़्लमंद मैं ही हूँ।"

राजा ने गुस्से में आकर पूछा—"क्या तुमसे ज्यादा अक़्लमंद दुनिया में कोई नहीं है?"

"महाराज, आप क्या कहते हैं? मुझ जैसे अक़्लमंद को अपने विदूषक के नाम पर अपने सेवक बना पाये तो इसका मतलब है कि आप मुझ से भी ज्यादा अक़्लमंद हैं।" विदूषक ने कहा। राजा खुश हुआ। विदूषक को पुरस्कार दे दिया।

विघ्नेश्वर

कृष्ण की बातें सुनकर मृदंग केसरी हँस पड़ा और बोला–"ओह, अपने को साधारण बताकर बचना चाहते हो? ऐसा कभी नहीं हो सकता। अभी इस बात का फ़ैसला हो जाना चाहिए कि तुम्हारा वेणुगान श्रेष्ट है या मेरा मृदंग वाद्य?"

कृष्ण ने कांपते हुए मुरली बजाने को निकाला, तब मृदंग केसरी मृदंग बजाने लगा। श्री कृष्ण ने यमुना कल्याणी राग बजाते मृदंग केसरी को चकित कर दिया और झट राग बदलकर हंसध्वनि राग का आलाप करने लगे, इस पर मृदंग केसरी एकदम उल्लास से भर उठा और अपने को भूलकर मृदंग बजाना छोड़ दिल खोलकर नाचने लगा।

कृष्ण जब चित्र-विचित्र गतियों के साथ विभिन्न स्वरों में हंसध्वनि राग का आलाप करते गये, इस पर मृदंग केसरी का रूप बदलकर विघ्नेश्वर अपनी सूंड उठाये तोंद हिलाते तांडव नृत्य करने लगे। उस समय उनका मृदंग गायब हो गया और उसकी जगह चूहा उछल-कूद करने लगा।

विघ्नेश्वर के लिए हंसध्वनि राग बहुत ही प्यारा था, उस राग को सुनकर वे पुलकित हो उठे। उस खुशी में तांडव नृत्य करते थक गये। इसे भांपकर श्री कृष्ण ने हठात् अपना मुरली-वादन बंद किया और विघ्नेश्वर को गिरते देख थामकर कहा–"पार्वतीनंदन, यह सोचकर डर के मारे मैंने आप को थाम लिया है

कि फिर भी आप औंधे मुँह गिर जायेंगे तो शायद आप की माता मुरली गान सुनने से आप पर रोक लगाते हुए कहीं शाप दे बैठे। इसलिए हे लंबोदर, बुरा मत मानियेगा।"

"हे कृष्ण, मैं आप का मुरली वादन सुनने के लिए ही यहाँ पर आया हूँ। हमारा कृष्ण-विनायकीय सचमुच ही सुंदर कांड है।" विघ्नेशर ने कहा।

"विघ्नेश्वर, बेचारे आप के वाहन पर मृदंग की थापें खूब पड़ीं।" यों कहते कृष्ण ने चूहे को प्यार से निहारा।

"कृष्ण! कंस का अंतिम समय निकट आ गया है। धनुर्याग के बहाने आप को लिवा जाने के लिए अक्रूर को भेजेंगे! विजयी होकर लौटिये।" विघ्नेश्वर ने कहा।

"यह सब आप की कृपा है।" यों कहते कृष्ण ने हाथ जोड़कर विघ्नेश्वर को प्रणाम किया।

इस पर विघ्नेश्वर बोले–"आप तो अवतार पुरुष हैं। यह सब मेरी कृपा नहीं, आप की लीला है। हाँ, अर्क इस समय कुब्जा के रूप में आप का इंतजार करती होगी। उस पर अनुग्रह कीजिये।" यों कहकर चूहे पर सवार हो आसमान में उड़कर अंतर्धान हो गये।

इसके बाद अक्रूर कृष्ण-बलराम को रथ पर मथुरा पुरी में ले गया। टेढ़े शरीर वाली कुब्जा कृष्ण के सामने आई, उनके चरणों पर चन्दन लगाकर प्रणाम किया, तब कृष्ण और बलराम के कंठों में फूल मालाएँ पहना दीं। इस पर कृष्ण ने कुब्जा को अपने दोनों हाथों से उठाया, तब वह कुब्जा-रूप से मुक्त हो अप्सरा के रूप में देवलोक में चली गई।

कंस ने कृष्ण का संहार करने के लिए जो कपट और माया जाल रचे, उन सब को विफल बनाकर कृष्ण ने कंस को सिंहासन पर से नीचे की ओर खींच डाला, आखिर उसका वध किया।

देवकी और वसुदेव के साथ उग्रसेन को भी कारागार से मुक्त करके उग्रसेन को मथुरा के सिंहासन पर बिठाया।

कृष्ण और बलराम बड़े हो गये। कृष्ण ने कई दुष्टों और राक्षसों का संहार किया, समुद्र के जल को दूर तक हटा ले जाकर शत्रु के लिए दुर्भेद्य रहने लायक द्वारका नगर का निर्माण किया और अपने भाई बलराम को यादवों का नायक बनाया।

इसके बाद कृष्ण ने रुक्मिणी को उठा लाकर उसके साथ विवाह किया। समस्त संपदाओं से वैभव पूर्ण होकर भी कृष्ण पहले की भांति गायें चराते, गायों का दूध दुहते गोपालकृष्ण के रूप में ही द्वारका में रहने लगे।

द्वारका नगर के एक तरफ़ सत्राजित नामक एक प्रमुख व्यक्ति राजा की तरह अपना एक छोटा-सा राज्य स्थापित कर सुख-भोगों का अनुभव करता था। वह अपने को अभिमान पूर्वक सूर्यवंशी क्षत्रिय बताते हुए सूर्य के प्रति भयंकर तपस्या करने लगा। उस पर प्रसन्न हो सूर्य ने शमंतकमणि नामक एक बहुत बड़ा रत्न उसे दे दिया। शमंतकमणि से छूटने वाली कांति की किरणें स्वर्ण कणिकाएँ बनकर उसे प्रति दिन अपार सोना देने लगीं।

सत्राजित प्रमुख व्यक्तियों के पास निमंत्रण देकर उन्हें बुलवा लेता, उन्हें मणि दिखाकर उसके प्रभाव का परिचय दे फूला न समाता था। कृष्ण के पास भी उसने निमंत्रण भेजा, पर वे न गये। उन्होंने बस, यही कहला भेजा कि कभी फ़ुरसत पाने पर जरूर आवेंगे। घमण्डी सत्राजित कृष्ण के प्रति ईर्ष्या करने लगा। वैसे उसने कृष्ण के बारे में कई अद्भुत बातें सुनीं, फिर भी उन्हें सिर्फ़ एक प्रमुख यादव के रूप में मानता था, इससे बढ़कर कृष्ण को कोई ऊंचा स्थान नहीं दिया।

सत्राजित के सत्यभामा नामक एक अपूर्व रूपवती पुत्री थी। शमंतकमणि के

साथ सत्यभामा का सौंदर्य भी विशेष रूप से विख्यात था। जरासंध जैसे महान वीर भी सत्यभामा को पाने का इंतजार करने लगे।

विघ्नेश्वर के प्रति सत्यभामा के मन में अपार श्रद्धा व भक्ति थी। वह हर विनायक चतुर्थी के दिन भक्ति और श्रद्धा के साथ विघ्नेश्वर की पूजा करके उनसे यही कामना करती कि कृष्ण को उसके अधीन बनावे। कृष्ण को कभी उस मार्ग से होकर निकलते वक्त अपने महल के ऊपर खड़े हो उन्हें ताकती रहती, पर कृष्ण उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखते, इस पर निराश हो सत्यभामा विघ्नेश्वर के सामने घुटने टेक ध्यान करती कि उसकी मनोकामना की पूर्ति करे।

सत्राजित अपनी पुत्री के हृदय को जानता था, फिर भी वह ऐसा अभिनय करता, मानो जानता ही न हो। एक दिन सत्यभामा को विघ्नेश्वर के सामने घुटने टेके हुए देख सत्राजित बोला–"बेटी, जब सूर्य भगवान का अनुग्रह हम पर है, तब ऐसी मनौतियों की क्या जरूरत है?"

इस पर सत्यभामा झट उठ खड़ी हुई और बोली–"पिताजी, ऐसा न कहिये! मनोकामना को सफल बनानेवाले देवता विघ्नेश्वर अकेले ही हैं!"

"तुम्हारी मनोकामना क्या है? रुक्मिणी के साथ हिस्सा बांट लेना ही है?" सत्राजित ने पूछा।

"हिस्सा बांटना कैसे? कृष्ण को मैं अपने अधीन में रखूंगी।" सत्यभामा ने जवाब दिया।

सत्यभामा के हठ को सत्राजित अच्छी तरह से जानता था। फिर भी उसे भोली-भाली मानकर चुप रह जाता था।

दूसरे दिन ही कृष्ण सत्राजित के पास आये। कृष्ण को आकृष्ट करने के लिए सत्यभामा अपने को अलंकृत कर खुशी के साथ सभा भवन में पहुँची, तब तक कृष्ण वहाँ से चले गये थे।

सत्राजित शाम तक मणि को मुट्ठी में लिये कृष्ण की दिशा में देखते उदास खड़ा रहा। इस पर सत्यभामा ने अपने पिता से पूछा–"पिताजी, आप उदास क्यों हैं? क्या उस आगंतुक सज्जन ने आप से मेरी माँग नहीं की?"

"अगर यह बात पूछते तो मैं ज्यादा फिक्र नहीं करता। जानती हो, उसने क्या पूछा? शामंतक मणि की माँग की। यह भी कहा कि वह मणि अगर उसके जैसे व्यक्ति के हाथ रहे तो सारी जनता के हित के काम में आ सकता है।" सत्राजित ने जवाब दिया।

सत्यभामा रुष्ट होकर बोली–"पिताजी, मुझसे भी बढ़कर यह शामंतक मणि आप के लिए प्यारा है?" यों कहकर वह तेजी के साथ जाने को हुई, तब सत्राजित उसे समझाने के स्वर में बोला–"ऐसा मत सोचो, बेटी! मैं कृष्ण की लालच पर चकित हूं, बस!"

"उन्होंने तो यह नहीं कहा कि मणि के द्वारा प्राप्त होनेवाले सोने को वे छिपाकर रखेंगे। ऐसी हालत में वह लालच कैसे हो सकती है? पिताजी, कृष्ण जैसे महानुभाव के माँगने पर खुशी के साथ वह मणि उनको दे देते तो क्या ही अच्छा होता!" सत्यभामा ने कहा।

सत्राजित क्रोध के मारे कांपते हुए गरज उठा–"नहीं दूंगा! मेरे प्राणों के साथ रहते कोई भी इस मणि को ले नहीं सकते! यह मणि मेरे लिए प्राण के समान है! मेरा सर्वस्व है!"

सत्यभामा का चेहरा लाल हो उठा–"हाँ, मणि आपके लिए सब कुछ है! मुझ से कहीं ज्यादा प्यारा है! कृष्ण को ही साबित करना होगा कि यह शमंतकमणि प्यारा है या मैं ज्यादा प्यारी हूँ।" यों कहते तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर चली गई। इसके थोड़े दिन बाद विनायक चतुर्थी आ पड़ी। सत्यभामा यथा प्रकार विघ्नेश्वर की पूजा करके उस दिन शाम

को पालकी में द्वारका नगर के लिए चल पड़ी।

उस शाम को आसमान में घना अंधेरा छा गया। कृष्ण गाय का दूध दुह रहे थे। अचानक अंधेरा फट गया, चौथ की चांदनी दूध में चकाचौंध के साथ प्रतिबिंबित हुई, कृष्ण को चंद्रमा का प्रतिबिंब दिखाई दिया, फिर दूसरे ही क्षण गहरा अंधकार फैलते ही चन्द्रमा अचानक गायब हो गया।

विनायक चतुर्थी के दिन चन्द्रमा को देख कृष्ण व्याकुल हो उठे, पूजा के मंदिर में जाकर अपने सर पर अक्षत डाल लिये, तब विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो आंखें बंदकर बोले–"हे देव, मैंने प्रतिबिंब ही सही देख लिया है! फिर आपकी जैसी कृपा!"

कृष्ण ध्यान में मग्न थे, तब उन्हें विघ्नेश्वर की मूर्ति में से ये शब्द सुनाई दिये–"हे कृष्ण, आपने अपनी इच्छा से नहीं देखा, आप पर दोषारोपण होने पर भी वह ऐसे ही दूर होगा, जैसे अचानक अंधेरा छंट जाता है! समझ लीजिए कि यह सब आपकी भलाई के लिए ही हुआ है!"

इस पर कृष्ण ने आंखें खोलकर कहा–"देव, यह सब आपकी लीला है!"

उसी समय रुक्मिणी पूजा के मंदिर में प्रवेश करते हुए विघ्नेश्वर के सामने खड़े हो जप करने वाले कृष्ण को देख चकित रह गई, तब धीरे से बोली–"श्रीमानजी, आप तो विघ्नेश्वरजी के साथ कोई वार्तालाप करते मालूम होते हैं!"

कृष्ण ने जवाब दिया–"इसी समय किसी विनायक चतुर्थी के दिन मुझे पालने वाली यशोदा माई से मैंने जो बातें कही थीं, वे आज मुझे याद हो आईं। बस! यही बात है!"

"स्वामिन, वे तुतली व प्यारी बातें मुझको भी सुनाइये!" रुक्मिणी ने पूछा।

कृष्ण बोले–"यशोदा माई चतुर्थी के दिन जो दूध दुह रही थीं, उसमें मैंने चन्द्रमा के प्रतबिंब को देख किलकारे मारे

थे। उस समय यशोदा माई यह कहते दुखी हो उठी–"बेटा, न मालूम तुम पर कितने दोषारोप होंगे। यह भी कहा था कि मेरे बड़े होने के बाद भी मैं इन आरोपों से बच नहीं सकूंगा। इसके जवाब में मैंने कहा था–"माँ, तब तो फिर से मुझे दूध में चन्द्रमा के प्रतिबिंब को देखना है न! वरना मुझ पर दोषरोप कैसे हो सकता है?"

"तब तो बताइये, उस वक़्त दोषारोप की बात क्या हुई?" रुक्मिणी ने पूछा।

"दाऊ बलराम ने कहा था कि मैं मिट्टी खाता हूँ!"

"तो फिर अब आपने चन्द्रमा को नहीं देखा है न? आप देखना भी चाहें तो दिखाई न देंगे! खूब घना अंधेरा छाया हुआ है!....हाँ, मैं कहना भूल गई कि सत्राजितजी के घर की मणि हमारे घर आ गई है!" रुक्मिणी बोली।

"शमंतकमणि का हमारे घर आना कैसे?" कृष्ण ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"ओह, वह मणि नहीं; सत्राजित की कन्यामणि! सत्यभामा मणि आई हुई है! हम बड़ी देर तक यहीं पर बात करती रहीं, आपका इंतजार करते-करते थककर वह चली गई। मैं उसको विदा करके चली आई, बस, आप दिखाई दिये!" रुक्मिणी ने कहा।

कृष्ण ने सिर हिलाकर कहा–"ओह, ऐसी बात है! हमारे घर के विघ्नेश्वर देव को देखने के ख़्याल से आई होगी! देख लिया है न!"

रुक्मिणी ने कहा–"मैं नहीं जानती कि विघ्नेश्वर देव को देखने आई थी या आप की नज़र में पड़ने के लिए! लेकिन मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि उसकी आँखें आपको ढूँढ-ढूँढ कर थक गई थीं!"

"उफ़! यह कैसे आश्चर्य की बात है! मैं समझ रहा था कि रुक्मिणी देवी मितभाषिणी है, पर आज वह बड़ी चतुरोक्तियाँ कर रही है!" कृष्ण ने आश्चर्य प्रकट किया!

गंधर्व राजकुमारी

[४]

हसन ने सोचा कि दीदी के मना करने पर भी उसकी बात नहीं मानी, इसलिए शायद वह झिड़कियाँ दे। मगर उसकी दीदी नाराज़ न हुई, उल्टे उसकी हालत पर रहम खाकर बोली—"तुम हिम्मत न हारो, मैं अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करूँगी कि तुम जिस कन्या से प्यार करते हो, वह ज़रूर तुम्हें प्राप्त हो जाय! लेकिन तुम इस भेद को मेरी बड़ी बहनों पर मत खोलो! न खोलने वाले दर्वाजे की बात उठेगी तो तुम साफ़ बतला दो कि तुम इस बाबत कुछ नहीं जानते! वे अगर यह पूछे कि तुम इस तरह क्यों कमज़ोर हो गये हो? तो यही जवाब दो कि आप लोगों की फ़िक्र करते ऐसा हो गया हूँ।"

इसके बाद हसन की दीदी ने अपनी बड़ी बहनों से कहा—"बेचारे हसन ने अकेला रहकर हमारी फ़िक्र में घुल-घुल कर खाट पकड़ लिया है। कहता था कि उसे अपनी माँ और गाँव की याद हो आई, इस पर उसे असहनीय दुख हुआ है।"

ये बातें सुन राजकुमारियाँ दुखी हुई और हसन के पास पहुँच कर उसकी सेवा-शुश्रूषा की। उसे खाना खिलाया और अपने पिता के देश में जो-जो अद्भुत देखें, सविस्तार सुनाकर उसका मनोरंजन किया।

इस तरह राजकुमारियों के उपचार पाकर हसन कुछ हद तक चंगा हो गया।

एक दिन सारी राजकुमारियाँ शिकार खेलने चल पड़ीं। सब से छोटी राजकुमारी हसन की मदद के लिए रह गई। बड़ी राजकुमारियों के चले जाने के बाद छोटी राजकुमारी हसन को तड़ाग के समीप के उद्यान वन में ले गई और बोली—"देखो

हसन! इस तड़ाग के बाजू में कई घाट हैं! तुम्हें जो राजकुमारियाँ दिखाई दीं, उन लोगों ने कहाँ पर स्नान किया है?" इस पर हसन ने उसे सिंहासन वाली जगह दिखा दी।

इस पर छोटी राजकुमारी चकित होकर बोली—"अरे भगवान, तुमने जिन कन्याओं को देखा है, वे गंधर्व चक्रवर्ती की बेटियाँ और उनकी सखियाँ हैं! उस चक्रवर्ती के अधीन हमारे पिताजी एक सामंत मात्र हैं! तुमने जिसके साथ प्यार किया है, वह चक्रवर्ती की सबसे छोटी पुत्री होगी। गंधर्व चक्रवर्ती जिस लोक में रहते हैं, उसमें मानव ही नहीं, बल्कि अन्य गंधर्व भी नहीं जा सकते। तुमने गंधर्व चक्रवर्ती की जिस कन्या को देखा है, वह हर अमावास्या के दिन अपनी सखियों के साथ यहाँ पर उड़कर आती हैं, स्नान करके पक्षी के खोलों के सहारे अपने लोक को लौट जाती है। उस खोल को तुम पा सकोगे तो वह राजकुमारी जरूर तुम्हारे हाथ लग सकती है। वह जब तड़ाग में उतर कर नहाने लग जायेगी, तब तुम उसके पक्षीवाले खोल को चुरा लो। वह गिड़-गिड़ाते हुए खोल को मांगेगी, अगर तुम पिघल कर दे दोगे तो तुम्हारे साथ हम, हमारे पिताजी, सब सर्वनाश को प्राप्त हो जायेंगे। तुम अपने कलेजे को पत्थर बनाकर उसका जूड़ा पकड़ करके घसीट ले आओ। ऐसा करने पर वह तुम्हारे अधीन हो जाएगी!"

हसन ये बातें सुन खुशी से उछल पड़ा।

दूसरे दिन अमावास्या का दिन था। अंधकार के फैलते ही हसन तड़ाग के पास जाकर सीढ़ियों के समीप छुप गया। थोड़ी देर बाद चक्रवर्ती की पुत्री और उसकी सखियाँ उड़ती हुई आ पहुँची और अपने पक्षी के खोल उतार कर पानी में उतर पड़ीं, हसन धड़कते दिल को लेकर उन खोलों के पास पहुँचा और अपनी प्रेयसी की पोशाकें लेकर फिर जा छुपा।

थोड़ी देर बाद चक्रवर्ती की कन्या तड़ाग में से बाहर आई, अपनी पोशाकों को न पाकर चिल्लाने लगी। उसकी सखियाँ यह चिल्लाहट सुनकर दौड़ी आईं और असली बात जान ली। उन लोगों ने अपनी मालिकिन की मदद देने के बदले घबरा कर अपनी-अपनी पोशाकें पहन लीं और फुर्र से आसमान में उड़ गईं।

इसके बाद हसन चक्रवर्ती की पुत्री के समीप पहुँचा। पर उसे देखते ही वह घबरा कर तड़ाग के किनारे दौड़ने लगी। हसन ने उसका पीछा किया। आखिर उसने चक्रवर्ती की पुत्री का जूड़ा पकड़ लिया। वह युवती आँखें बंदकर चुपचाप हसन के पीछे चलने लगी। उसे अपने कमरे में लाकर दर्वाजे बंद किये, तब बाहर से ताला लगाकर यह समाचार अपनी दीदी को सुनाया।

चक्रवर्ती की पुत्री को अपने कमरे में पहुँचने का समाचार सुनकर हसन की दीदी उसके पास पहुँची और उसके पैरों पर गिरकर बोली–"महारानीजी, आप के आने से हमारा घर पवित्र हो गया है!"

चिंता में डूबी चक्रवर्ती की पुत्री ने सर उठाकर हसन की दीदी को देखा और पूछा–"ओह, समझ गई! क्या तुम अपने महाराज की पुत्री का इस तरह एक मानव के द्वारा अपमान करा देती हो? दर असल तुमने एक मानव को अपने महल में कैसे प्रवेश करने दिया? तुम्हारी यह कैसी हिमाक़त है? तुम्हारी मदद के बिना यह छिपे रहकर मुझे पकड़ सकता था?"

इस पर हसन की दीदी बोली–"देवी, यह युवक कोई साधारण व्यक्ति नहीं है! इसकी तुलना कर सकने वाला कोई दूसरा मानव नहीं है! इसका चरित्र अद्भुत है! इसके मन में नाम मात्र के लिए भी कोई कुविचार नहीं है! विधि से प्रेरित होकर इसने आप के साथ गहरा प्यार किया है! ईश्वर के निर्णय को कौन बदल सकते हैं? प्रेमी लोग क्षमा करने योग्य होते हैं!

करने का हर प्रकार से प्रयत्न करने लगी। अंत में चक्रवर्ती की पुत्री ने कहा–"शायद मेरी क़िस्मत में अपने पिता और जन्म स्थान से जुदा होना लिखा हुआ है! क़िस्मत को कौन टाल सकता है?"

अपने चक्रवर्ती की पुत्री को थोड़ा-बहुत आश्वस्थ करने के बाद छोटी राजकुमारी हसन के पास पहुँची और बोली–"तुम अपनी प्रेयसी के दिल को अपनी ओर खींचने की कोशिश करो। तुम उनके साथ बड़ा ही आदरपूर्ण व्यवहार करो। उनके साथ बातचीत करते वक़्त सज्जनता दिखाओ।"

आप विश्वास कीजिए कि जब इसने पहली बार आप को देखा, तभी यह आप पर मुग्ध हो आप को पाने के वास्ते अपने प्राण तक छोड़ने के लिए तैयार हो गया है! आपके साथ और नौ अपूर्व सुंदरियाँ थीं, फिर भी इसके मन को केवल आप ही आकृष्ट कर पाई हैं!"

ये बातें सुनने पर चक्रवर्ती की पुत्री ने समझ लिया कि अब उसे इस मानव के हाथ से मुक्त होने का कोई उपाय नहीं है। इस पर उसने गहरा निश्वास लिया।

इसके बाद हसन की दीदी ने चक्रवर्ती की पुत्री को अच्छी पोशाकें पहनवा दीं, उसे खाना खिलाकर उसकी चिंता को दूर

हसन जब चक्रवर्ती की पुत्री के सामने आकर खड़ा हो गया, तब उसने हसन की ओर आपादमस्तक देखा। उसके अपूर्व सौंदर्य को देख वह विचलित हो उठी। इस पर हसन ने बड़ी अदब के साथ कहा–"राजकुमारी! मैं आपके लिए एक गुलाम जैसा हूँ! मेरे दिल के किसी भी कोने में आप के साथ बलात्कार करने की इच्छा नहीं है! शास्त्र-विधि से आप के साथ विवाह करने की मेरी इच्छा है! शादी के बाद हम दोनों मेरे जन्म स्थान बगदाद को चले जायेंगे। मैं आप के वास्ते बहुत सारे दास-दासियों का इंतजाम करूँगा। वहाँ पर मेरी माँ हैं। उनसे बढ़कर योग्य

औरत इस दुनिया भर में दूसरी कोई न होंगी! वे आप को अपनी बेटी जैसे मानेंगी! उनकी रसोई एकदम अद्भुत होती है! वे आपको दिव्य भोजन बनाकर खिलायेंगी।"

चक्रवर्ती की पुत्री हसन को न मालूम क्या जवाब देती, लेकिन इस बीच दर्वाजे पर दस्तक देने की आवाज़ सुनाई दी। उसे खोलने का काम हसन का था। इसलिए उसने दौड़े जाकर किवाड़ खोल दिये। दर्वाजे पर हसन की छे बड़ी दीदियाँ खड़ी थीं। वे शिकार से लौट आई थीं। उन लोगों ने हसन के अन्दर बड़ा ही परिवर्तन पाया। हसन ने उन्हें चक्रवर्ती की पुत्री का समाचार नहीं सुनाया, पर शिकार करके लाये गये सारे शिकारों को अपने कमरे के अन्दर पहुँचा दिया।

सब से बड़ी दीदी हसन से बोली—"हसन, बात क्या है? आज तुम बड़े ही खुश मिज़ाज़ नज़र आते हो? इसका कोई बड़ा कारण होगा, बताओ, क्या है वह?"

इस पर हसन लजा गया और उसी वक़्त वहाँ पर पहुँचने वाली छोटी दीदी की ओर इस तरह दृष्टि दौड़ाई जिसका मतलब था, इसका कारण तुम बताओ।"

"बात वैसे कोई खास नहीं है! हमारा हसन आज एक चिड़िया को पकड़ लाया है। उसे पालतू बनाना है।" छोटी राजकुमारी ने जवाब दिया।

"अरे, इस छोटी-सी बात के लिए ही यह लजाता क्यों है?" बड़ी दीदी बोली।

"उस चिड़िया के प्रति इसके दिल में कैसा प्यार है, कुछ बताया नहीं जा सकता!" इन शब्दों के साथ छोटी राजकुमारी ने अपनी दीदियों को सारा वृत्तांत सुनाया। इस पर वे सब तुरंत चक्रवर्ती की पुत्री के पास पहुँचीं, उन्हें प्रणाम किया और हसन के साथ शादी करने को प्रोत्साहित किया। इसके बाद उन लोगों ने खुद हसन के हाथ में उनका हाथ रखकर पाणिग्रहण भी करा दिया।

(और है।)
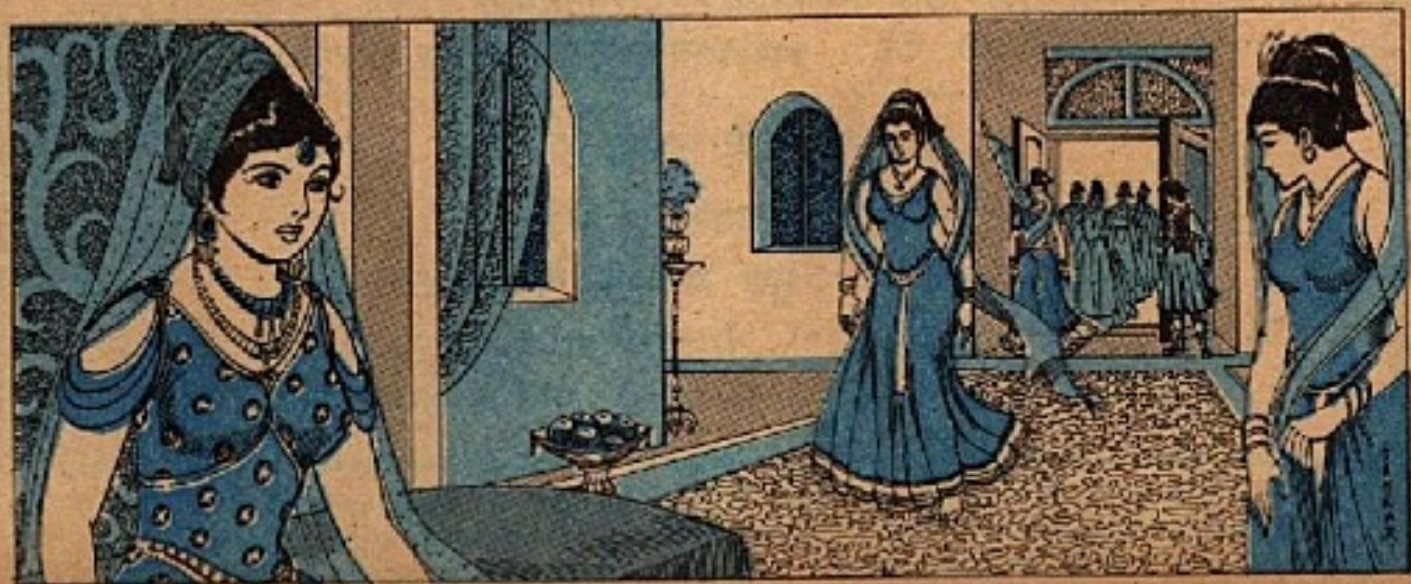
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अप्रैल १९८२ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Kiran

★

Kiran

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ फरवरी १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

दिसम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो: शिकार पर नज़र!

द्वितीय फोटो: भूख लगी है किस कदर!!

प्रेषिका: नीना परहर, ५४-११६, बी. एस. एल. कॉलोनी, सुदर नगर (हि.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

तितली रानी, तितली रानी, आओ हमारे संग
बाग़ हमारा देखो, देखो फूलों के रंग
पंखों पर तुम्हारे हम जॅम्स सजाएँगे
आज तुमको जॅम्स की तितली बनाएँगे
GEMS
कितनी मधुर कल्पना,
झट ले आओ जॅम्स अपना!
कॅडबरिज़
कॅडबरिज़ जॅम्स हैं ही ऐसे, मीठी मीठी कल्पनाओं जैसे!
OBM/8642/HN
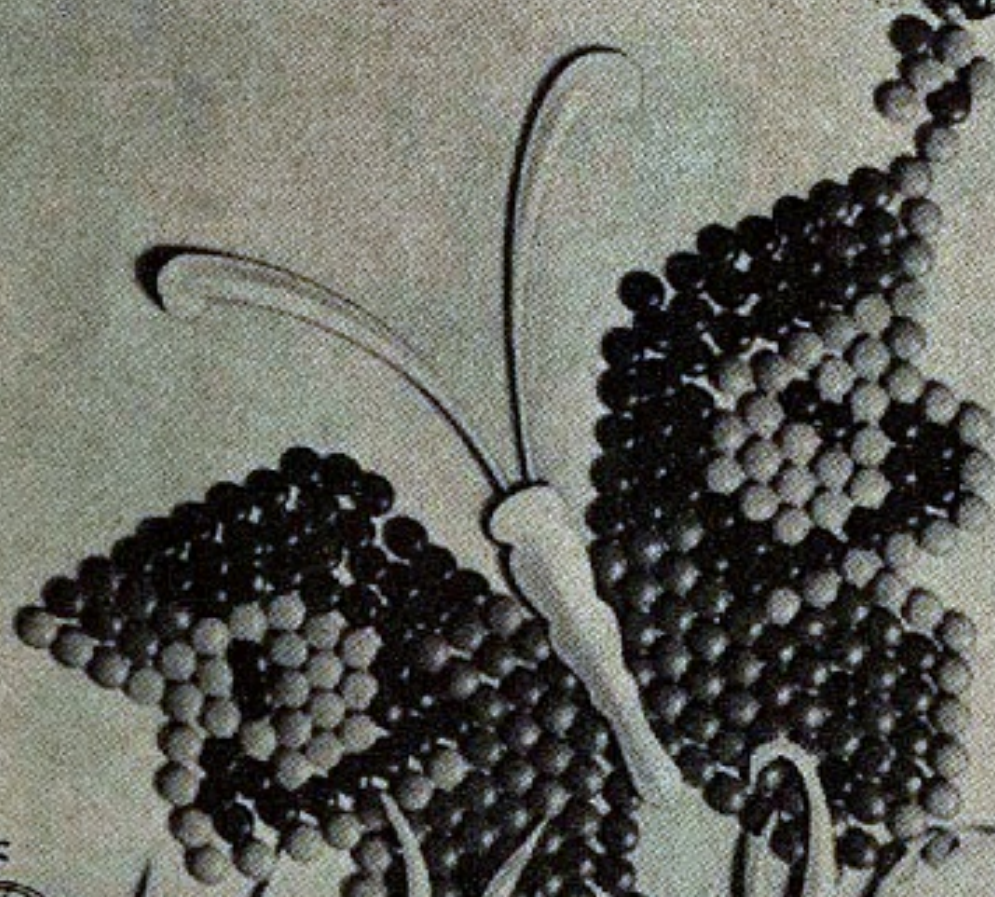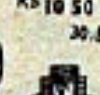
SWEETS
OF DISTINCTION

मॉर्टन कन्फैक्शनरी
एन्ड मिल्क प्रोडक्ट्स फैक्ट्री

फक्त आम्हीच आपल्या उत्पादनांची ५ वर्षांची गॅरंटी देतो. कारण त्यामागे आहेत १५ वर्षांचे परिश्रम आणि संशोधन. म्हणूनच आम्ही या क्षेत्रात अग्रेसर आहोत. आम्ही बनवलेले दागिने व त्यांच्या किंमतीचे माहिती पत्रक आपण घरबसल्या मोफत मिळवू शकता. आमच्या किंमतीचा कॅटलॉग पहा. मनपसंत वस्तूचा नंबर कळवा आणि व्ही. पी. पी. ने ती वस्तू घरी मागवा. आम्हाला भारतभर अनुभवी एजन्ट हवे आहेत.

MERI GOLD COVERING WORKS. (Estd: 1963)
P.O. BOX 1405, 14, RANGANATHAN STREET
T. NAGAR MADRAS-600 017 INDIA
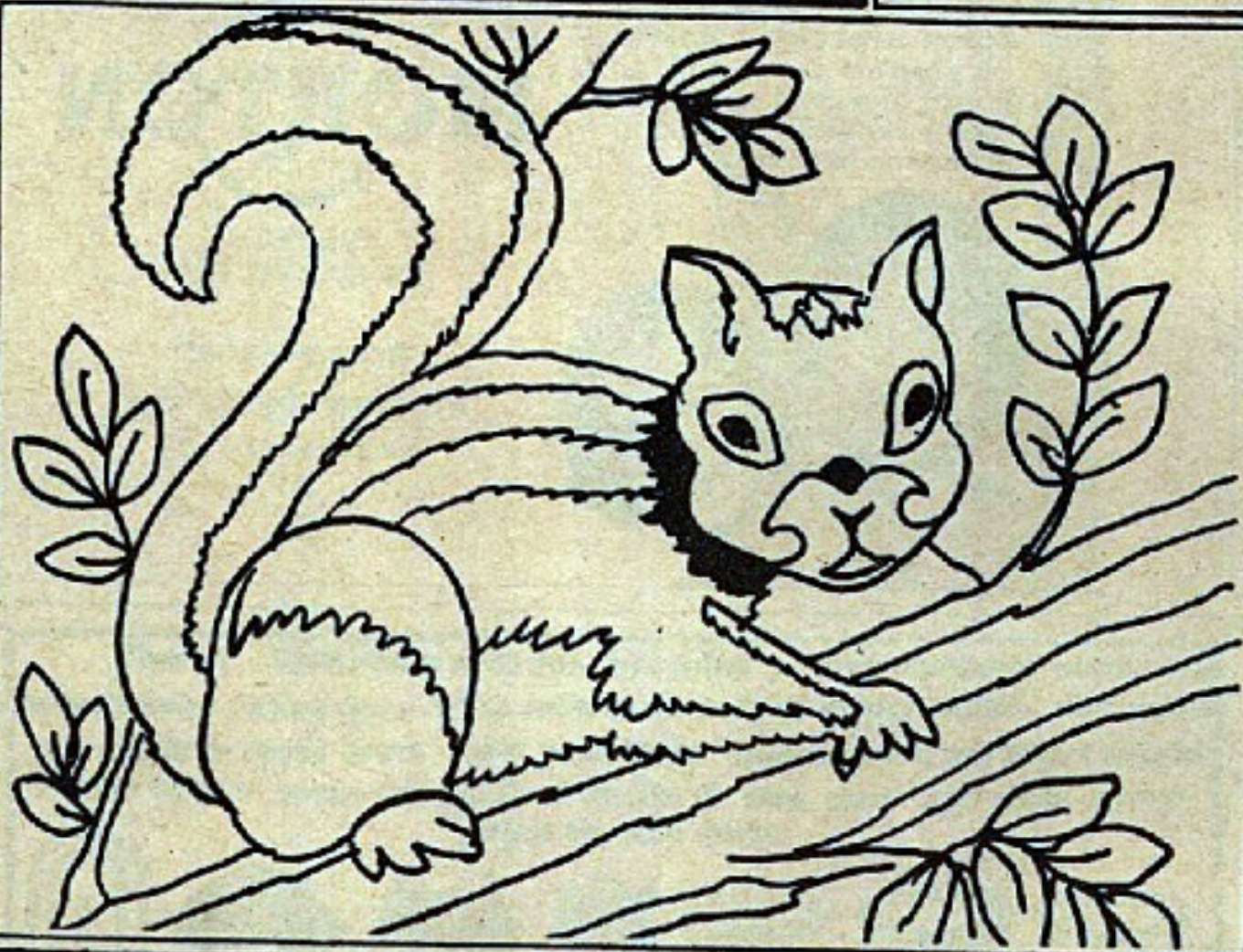
A sweet tussle between age-old traditions and mis-conceived Modern values....
A feast for your eyes, yet true to life.
श्रीमान श्रीमती
बी. नागी रेड्डी प्रस्तुत करते हैं. एक नयी महान फिल्म
Director :VIJAYA REDDY
Story :K. S. RAO
Dialogue :RAJ BALDEV RAJ
Lyrics :MAJROOH SULTANPURI
Music :RAJESH ROSHAN
Camera : P. L. RAI
Art : S. KRISHNA RAO
Editing K. BALU
Associate Director : VIJAYAKUMAR RAICHURA
Stills : R. NAGARAJA RAO
Production Controller : M. VEERA RAGHAVULU
RECORDS ON HMV
Frame to Frame a Family Film
विजय प्रॉडक्शन्स-चित्र

चन्दामामा
क्लासिक्स
और
कॉमिक्स

राम और श्याम
रुपहली धारियाँ
आधी छुट्टी वक्त है खेल-कूद के मज़े का, पेट दर्द का नहीं.
पेट में दर्द? क्या खाया आज तुमने?
पॉपिन्स!
ये हो ही नहीं सकता! ज़रा मुझे पैकट तो दिखाओ.
लाल, पीला नारंगी...
हरा, सफ़ेद
पर रुपहला रंग कहाँ है?
रुपहला रंग! कौन सा रुपहला रंग?
तभी तो तुम धोखा खा गये. असली पॉपिन्स अब आती है रुपहली और रंग बिरंगी धारियों वाले चमकदार पैक में.
अगली बार ख्याल रखना नकली माल मत ले लेना...
जिससे पेट का दर्द हो जाये!
PARLE
POPPINS
पॉपिन्स गटकने के पहले...
ज़रा उनकी असलियत की जाँच परख कर लो.
रंग बिरंगे पैक पर रुपहली धारियाँ देख लो.
PARLE
POPPINS
everest/81/PP/103-hn.